कृषक दूत

कृषि एवं ग्रामीण विकास का प्रमुख साप्ताहिक

प्रकाशन एवं प्रेषण प्रत्येक मंगलवार

शुभ दीपावली

ISSN-2583-4991

● भोपाल मंगलवार 03 से 09 नवम्बर 2026 ● वर्ष-27 ● अंक-24 ● पृष्ठ-24 ● मूल्य-20 रु. ● RNI No. MPHIN/2000/06836/डाक पंजीयन क्र.एम.पी./भोपाल/625/2024-26







सीएनएच इण्डस्ट्रियल (न्यू हालैण्ड ट्रैक्टर) एवं कोरोमंडल इंटरनेशनल लिमिटेड की ओर से दीपावली पूजन हेतु बहुरंगीय पोस्टर मध्यावर्त पेज पर इस अंक के साथ निःशुल्क पायें

दीपावली की हार्दिक शुभकामनायें

कृषक दूत के सुधि पाठकों, विज्ञापनदाताओं, लेखकों एवं शुभचिंतकों को प्रकाश पर्व दीपावली की हार्दिक शुभकामनायें।



मप्र स्थापना दिवस का मुख्य समारोह 1 से 3 नवम्बर तक

सीएम करेंगे कृषि प्रदर्शनी का उद्घाटन

भोपाल। मध्यप्रदेश स्थापना दिवस का मुख्य समारोह भोपाल के लाल परेड ग्राउण्ड में भव्य स्तर पर एक नवम्बर को मनाया जायेगा।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव 01 नवम्बर को सुबह 11 बजे आधुनिक कृषि प्रदर्शनी, विकास दीर्घा, महिला उद्यमिता मंडप और देशज व्यंजन मेले का उद्घाटन कर अवलोकन करेंगे। शाम 6.30 बजे मुख्य सांस्कृतिक संध्या शुरू होगी, जिसमें 71 बच्चे 'वन्दे मातरम्' का सामूहिक गायन करेंगे और पुलिस बैंड राष्ट्रगान प्रस्तुत करेगा। इसके बाद आतिशबाजी होगी। धर्मेंद्र भाव सिंह लोधी के अनुसार समारोह की थीम 'विरासत से विकास के पथ की ओर अग्रसर प्रदेश' है। इसी दौरान



तीन दिवसीय कृषि प्रदर्शनी भी लगेगी

102 विद्यार्थियों को भगवान कृष्ण मेधावी छात्रवृत्ति के तहत एक लाख रुपये दिए जाएंगे। 'किसान कल्याण स्वाभिमान पर्व क्विज' के 165 विजेताओं को 55 ट्रैक्टर, 55 बुलेट मोटरसाइकिल और 55 ई-स्कूटर दिए जाएंगे।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की अवधारणा अनुसार इस बार स्थापना दिवस 3 दिवसीय होगा। समारोह का सभी जिलों में भी आयोजन होगा। सामान्य प्रशासन विभाग ने आयोजन के संबंध में सभी कलेक्टर और कमिश्नर को निर्देश जारी किए हैं। मंचीय कार्यक्रम एवं सुगम संगीत के लिए प्रतिष्ठित कलाकार की प्रस्तुति एवं समापन भव्य आतिशबाजी से किया जायेगा। कार्यक्रम स्थल में 1 से 3 नवम्बर तक संस्कृति के विषयों के साथ कृषि एवं उससे जुड़े अनुषांगिक विषयों पर केन्द्रित प्रदर्शनी तीन दिवस के लिए आयोजित की जायेगी। प्रत्येक जिले से प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान के लिए एक-एक विजेता चुना गया है। मध्यप्रदेश स्थापना दिवस के अवसर पर सभी चयनित किसानों को पुरस्कार दिए जाएंगे।

141 लाख हेक्टेयर में रबी फसलें बोई जायेंगी

गेहूं का रकबा इस साल होगा कम

(विशेष प्रतिनिधि)

भोपाल। प्रदेश में इस साल कम बारिश का असर रबी फसलों की बुवाई पर दिखने लगा है। किसान कल्याण विभाग ने 12 जिलों में कम बारिश के कारण रबी फसलों का बुवाई लक्ष्य कम कर दिया है। कृषि संचालनालय, मध्यप्रदेश से प्राप्त जानकारी अनुसार चालू रबी सीजन में 140.82 लाख हेक्टेयर में रबी बुवाई का लक्ष्य रखा है। इस वर्ष कम पानी को देखते हुये गेहूं की बुवाई का लक्ष्य घटा दिया गया है। गेहूं की बुवाई 91.32 लाख हेक्टेयर में प्रस्तावित है जो पिछले साल की बुवाई 97 लाख हेक्टेयर से कम है। चना की बुवाई 19.87 लाख हेक्टेयर में करने की तैयारी है। प्रमुख तिलहनी फसल सरसों की बुवाई 14.12 लाख हेक्टेयर में की जायेगी जो पिछले साल की अपेक्षा 2 लाख हेक्टेयर अधिक है। रबी की अन्य फसलों में जौ 41 हजार हेक्टेयर में बोया जायेगा। रबी मक्का 1.49 लाख हेक्टेयर में बोने का कार्यक्रम बनाया गया है। मटर की बुवाई 3.27 लाख हेक्टेयर, मसूर 7.86 लाख हेक्टेयर एवं अलसी की 1.14 लाख हेक्टेयर में बुवाई की तैयारी है। गन्ना की फसल 1.34 लाख हेक्टेयर में बोयी जायेगी। रबी दलहनी फसलों की बुवाई 31 लाख हेक्टेयर एवं तिलहनी बुवाई 15.26 लाख हेक्टेयर में करने का लक्ष्य रखा गया है।

12.95 लाख हेक्टेयर में रबी बुवाई

रबी फसलों की बुवाई किसानों द्वारा शीघ्रता से की जा रही है। प्राप्त जानकारी अनुसार 12.95 लाख हेक्टेयर में रबी फसलों की बुवाई की जा चुकी है। इसमें सबसे अधिक 3.63 लाख हेक्टेयर में सरसों की बुवाई की गई है। चना की बुवाई 3.14 लाख हेक्टेयर एवं गेहूं की बुवाई 3.30 लाख हेक्टेयर में हुई है। जौ, मक्का, मसूर, मटर, अलसी एवं गन्ना की बुवाई प्रारंभिक अवस्था में है। इस सप्ताह रबी फसलों की बुवाई में तेजी आने की संभावना है। धान उत्पादक क्षेत्रों को छोड़कर शेष जिलों में रबी फसलों की बुवाई का कार्य किसानों द्वारा तेजी से किया जा रहा है।



प्रमुख रबी फसलों की बुवाई एवं लक्ष्य

फसल	सा.क्षे.	लक्ष्य 26-27	बोनी 26-27
गेहूं	99.80	91.32	3.30
जौ	0.20	0.41	0.00
मक्का	0.79	1.49	0.11
चना	17.50	19.87	3.14
मटर	1.92	3.27	0.94
मसूर	6.28	7.86	1.16
सरसों	11.30	14.12	3.63
अलसी	0.61	1.14	0.63
गन्ना	1.07	1.34	0.01
रबी योग	139.47	140.82	12.95

सरकारी महाविद्यालयों में छात्र अब उन्नत खेती के साथ मौसम का हाल भी पढ़ेंगे

सीआईएई-आईआईएसएस और मौसम विभाग के बीच एमओयू

भोपाल। मप्र के करीब 300 शासकीय महाविद्यालयों में अब छात्रों को उन्नत खेती के साथ मौसम विज्ञान भी पढ़ाया जायेगा। प्रदेश के उच्च शिक्षा विभाग ने विद्यार्थियों को कृषि तकनीक और पर्यावरण विज्ञान के क्षेत्र में भविष्य के लिए तैयार करने की बड़ी पहल की है। इसके तहत भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर) के केंद्रीय कृषि अभियांत्रिकी संस्थान (सीआईएई) भोपाल, भारतीय मृदा विज्ञान संस्थान (आईआईएसएस) भोपाल, भारत मौसम विज्ञान विभाग (आईएमडी) नई दिल्ली के साथ विशेष अनुबंध (एमओयू) किए गए हैं।

इस साझेदारी का सीधा लाभ 300 कॉलेजों के ग्रामीण और कस्बाई विद्यार्थियों को मिलेगा, जिनकी पृष्ठभूमि कृषि से जुड़ी है। नए दौर के पाठ्यक्रमों और प्रैक्टिकल ट्रेनिंग के जरिए छात्र अब स्मार्ट फार्मिंग, आधुनिक



कृषि यंत्रों का संचालन, मौसम पूर्वानुमान, मिट्टी की सेहत सुधारने की उन्नत तकनीकें कॉलेज स्तर पर ही सीख सकेंगे। उच्च शिक्षा विभाग के आयुक्त प्रबल सिपाहा ने बताया कि बच्चों को प्रैक्टिकल नॉलेज मिले इसी उद्देश्य से अनुबंध किए जा रहे हैं।

विद्यार्थियों को कृषि यंत्रीकरण और फार्म ऑटोमेशन का प्रशिक्षण दिया जाएगा। छात्र फसलों की निगरानी, सेंसर-आधारित सिंचाई, ड्रोन, स्वचालित मशीनों के उपयोग की आधुनिक तकनीकें सीखेंगे। विद्यार्थी मिट्टी की जांच, मृदा स्वास्थ्य कार्ड, जैविक खाद और टिकाऊ खेती का प्रशिक्षण लेंगे। मौसम विभाग (आईएमडी), टीएफआरई और आईआईएफएम के सहयोग से सैटेलाइट-रडार डेटा, मौसम पूर्वानुमान, जलवायु परिवर्तन और पारिस्थितिकी तंत्र का व्यावहारिक अध्ययन करेंगे।

दीपावली से पहले कर्मचारियों-पेंशनरों को तोहफा

भोपाल। राज्य सरकार ने दीपावली से पहले कर्मचारियों और पेंशनरों के महंगाई भत्ते (डीए) और महंगाई राहत (डीआर) में 2 प्रतिशत बढ़ोतरी के आदेश जारी किए हैं। 7वें वेतनमान वाले कर्मचारियों का डीए 58 प्रतिशत से बढ़कर 60 प्रतिशत हो जाएगा। हालांकि यह अभी भी केंद्रीय कर्मचारियों से 3त्न कम है। केंद्र ने हाल ही में 1 जुलाई 2026 से डीए डीआर में 3त्न की बढ़ोतरी करते हुए इसे 60 से बढ़ाकर 63 प्रतिशत कर दिया है। वहीं, जनवरी से सितंबर के बीच सेवानिवृत्त कर्मचारियों और दिवंगत मप्र के कर्मचारियों को बढ़े हुए डीए का लाभ 1 जनवरी 2026 से मिलेगा। अक्टूबर के वेतन में इसका लाभ मिलेगा। जनवरी से सितंबर तक 9 महीने का एरियर तीन समान किश्तों में मिलेगा। कर्मचारियों के नॉमिनी को एरियर एकमुश्त मिलेगा। 80 वर्ष से अधिक उम्र के पेंशनरों की अतिरिक्त पेंशन पर भी डीआर मिलेगा।

नव वर्ष पर शुभचिंतकों, मित्रों एवं प्रिय ग्राहकों को भेंट का सर्वोत्तम उपहार

कृषक दूत डायरी 2027



अब नए आकर्षक आकार में

कृषक दूत डायरी 2027 के प्रमुख आकर्षण

- केन्द्र एवं राज्य पोषित विभिन्न कृषि एवं अन्य योजनाओं की जानकारी।
- प्रमुख फसलों की कृषि कार्यमाला एवं उन्नत किस्मों की विस्तृत जानकारी।
- तहसील विकासखंड, कृषि उपज मंडियों की सूची।
- फसल उत्पादन संबंधी सांख्यिकीय।
- माहवार कैलेण्डर तिथि, व्रत एवं त्यौहारों की जानकारी।

कृषक दूत की सदस्यता लेकर डायरी मुफ्त पायें

संपर्क करें ➡ कृषक दूत

एफ.एम.-16, ब्लॉक-सी, मानसरोवर कॉम्पलेक्स रानी कमलापति रेल्वे स्टेशन के पास, भोपाल (म.प्र.)
फोन : (0755) 4233824 मो. : 9300754675, 9827352535, 9425013875
Email:- krishak_doot@yahoo.co.in I Website : www.krishakdoot.org

प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि की 24वीं किस्त जारी

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने गुजरात के बनासकांठा से डीबीटी के माध्यम से पीएम किसान के तहत लगभग 10 करोड़ किसानों के खातों में 18 हजार करोड़ रुपये से अधिक की राशि ट्रांसफर की है। इस अवसर पर कार्यक्रम को संबोधित करते हुए श्री मोदी ने कहा कि हमारे किसान और अन्नदाता विकसित भारत के सबसे मजबूत स्तंभों में से एक हैं। उन्होंने कहा कि हमारी सरकार ने हमेशा किसानों के कल्याण और उन्हें सशक्त बनाने को प्राथमिकता दी है।



कृषि बजट का जिक्र करते हुए प्रधानमंत्री श्री मोदी ने कहा कि साल 2013-14 के मुकाबले देश का कृषि बजट अब 5 गुना से ज्यादा हो गया है। प्रधानमंत्री के मुताबिक पीएम किसान योजना अब देश के करोड़ों छोटे किसानों के जीवन का एक अहम हिस्सा बन चुकी है। विभिन्न सरकारी उपायों के माध्यम से पिछले वर्षों में किसानों को 50 लाख करोड़ रुपये से अधिक का लाभ मिला है या उनकी इतनी बचत हुई है। उन्होंने कहा कि इसमें से करीब 4.5 लाख करोड़ रुपये पीएम-किसान योजना के तहत सीधे छोटे किसानों के बैंक खातों में भेजे गए हैं। प्रधानमंत्री ने वैश्विक अनिश्चितताओं के बीच खाद की बढ़ती कीमतों से किसानों को बचाने के लिए किए गए सरकारी प्रयासों की भी जानकारी दी। उन्होंने कहा कि किसानों के कल्याण के लिए प्रतिबद्ध हमारी सरकार ने कीमतों में बढ़ोतरी का यह बोझ किसानों पर नहीं पड़ने दिया। सरकार ने इस पर 16 लाख करोड़ रुपये खर्च किए।

सहकारिता से ग्रामीण समृद्धि और रोजगार को मिलेगी नई गतिः श्री शाह

राष्ट्रीय सहकारी विकास निगम की महापरिषद की 93वीं बैठक आयोजित

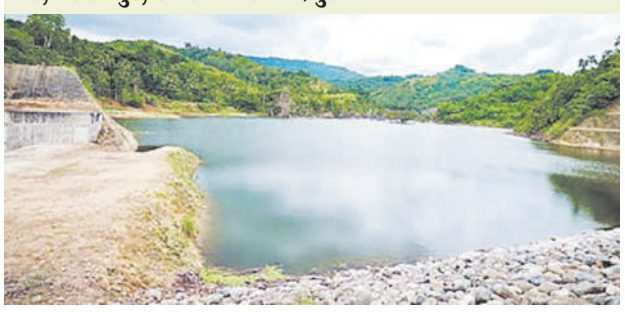
नई दिल्ली। केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह की अध्यक्षता में राष्ट्रीय सहकारी विकास निगम की 93वीं महापरिषद की बैठक आयोजित हुई। इसमें निगम की उपलब्धियों की समीक्षा के साथ आगामी 25 वर्षों का रोडमैप तैयार करने पर जोर दिया गया।



बैठक में श्री शाह ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 'सहकार से समृद्धि' के विजन के अनुरूप सहकारिता को सर्वस्पर्शी और सर्वसमावेशी विकास का माध्यम बनाना लक्ष्य है। उन्होंने पिछले पांच वर्षों में एनसीडीसी की प्रगति को सराहनीय बताते हुए इस अवधि को निगम का स्वर्णिम काल बताया। उन्होंने कहा कि निगम की पहुंच सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों तक हो चुकी है। अब छोटे किसानों, पशुपालकों, मछुआरों, ग्रामीण महिलाओं और वंचित वर्गों तक इसका लाभ पहुंचाना प्राथमिकता होनी चाहिए। सहकारी क्षेत्र में नवाचार को बढ़ावा देने के लिए 'सहकार नवाचार योजना' भी शुरू की गई है। इसके तहत पात्र संस्थाओं को 25 लाख रुपये तक शत-प्रतिशत अनुदान देने का प्रावधान है।

मध्यप्रदेश की दो बड़ी सिंचाई परियोजनाओं को नाबार्ड की मंजूरी

धार, नरसिंहपुर, रायसेन और नर्मदापुरम के 392 गांवों को मिलेगा लाभ



भोपाल। राष्ट्रीय कृषि एवं ग्रामीण विकास बैंक ने ग्रामीण आधारभूत संरचना विकास निधि के अंतर्गत मध्यप्रदेश की दो प्रमुख सिंचाई परियोजनाओं के लिए 2,606.04 करोड़ रुपये की ऋण सहायता मंजूर की है। इन परियोजनाओं से चार जिलों के 392 गांवों में सिंचाई सुविधाओं का विस्तार होगा और करीब 1.71 लाख किसानों को लाभ मिलेगा।

नाबार्ड की पहली स्वीकृति धार जिले की कुक्षी माइक्रो लिफ्ट सिंचाई परियोजना के लिए दी गई है। इसके लिए 1,500 करोड़ रुपये की ऋण सहायता मंजूर की गई है। परियोजना के तहत धार जिले की कुक्षी, मनावर, गंधवानी और दही तहसीलों के 247 गांवों में 75 हजार हेक्टेयर कमांड क्षेत्र को सिंचाई सुविधा उपलब्ध कराई जाएगी। इससे लगभग 1.40 लाख किसान लाभान्वित होंगे। दूसरी परियोजना चिंकी-बोरास बैराज संयुक्त बहुउद्देशीय परियोजना से संबंधित है। इसके लिए नाबार्ड ने 1,106.04 करोड़ रुपये की ऋण सहायता स्वीकृत की है। इस परियोजना से नरसिंहपुर, रायसेन और नर्मदापुरम जिलों के 145 गांवों में 50,977 हेक्टेयर क्षेत्र को सिंचाई सुविधा मिलेगी तथा 30,618 किसानों को लाभ होगा।

नाबार्ड की मुख्य महाप्रबंधक सी. सरस्वती ने बताया कि वर्ष 1995 में स्थापना के बाद से ग्रामीण आधारभूत संरचना विकास निधि मध्यप्रदेश में ग्रामीण अवसंरचना के विकास का महत्वपूर्ण माध्यम रही है। उन्होंने कहा कि नाबार्ड ग्रामीण बुनियादी ढांचे को मजबूत बनाने तथा ग्रामीण भारत में समावेशी और सतत विकास सुनिश्चित करने के लिए प्रतिबद्ध है।

कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान की मां काशीबाई का निधन

गृह ग्राम जैत में हुआ अंतिम संस्कार

भोपाल। केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री शिवराज सिंह चौहान की मां काशीबाई का 30 अक्टूबर 2026 को भोपाल स्थित एम्स में उपचार के दौरान निधन हो गया। वह लंबे समय से अस्वस्थ थीं। उनका अंतिम संस्कार 30 अक्टूबर को सीहोर जिले के जैत गांव में किया गया। श्री चौहान की माताजी के निधन पर मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव, उप मुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ल एवं जगदीश देवड़ा सहित देश-प्रदेश के प्रमुख नेताओं ने शोक संवेदना व्यक्त की है। इस मौके पर प्रमुख व्यक्तियों के अलावा भारी संख्या में आम नागरिक मौजूद रहे।





स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक अमरेन्द्र मिश्रा द्वारा के डी प्रिंटर्स, मानसरोवर काम्प्लेक्स, होशंगाबाद रोड, भोपाल से मुद्रित एवं एफ.एम. 16, ब्लॉक-सी, मानसरोवर काम्प्लेक्स, रानी कमलापति स्टेशन के सामने, भोपाल (म.प्र.) से प्रकाशित। संपादक- अमरेन्द्र मिश्रा। इस अंक का मूल्य- 20/- वार्षिक शुल्क-700/- फोन: (0755) 4233824, आरएनआई नं. : MP HIN/2000/06836 Krishak Doot also available on YouTube

साप्ताहिक सुविचार

सूर्य आकाश में छुप कर नहीं विचर सकता। महापुरुष भी संसार में गुप्त नहीं रह सकते। – व्यास

रबी फसल बुवाई कार्यक्रम

कृषक दूत सम्पादकीय

प्र देश में इस साल भी पिछले साल की तरह 'देर आये दुरुस्त आये' की तर्ज पर रबी फसलों की बुवाई का लक्ष्य घोषित किया गया है। इस साल प्रदेश के 12 जिलों में कम बारिश को देखते हुये गेहूं की बुवाई का लक्ष्य 5 लाख हेक्टेयर के लगभग कम किया गया है। जिन 12 जिलों में कम बारिश हुई है इनमें अधिकांश प्रमुख गेहूं उत्पादक जिले हैं। इनमें से अधिकतर पश्चिमी क्षेत्र के जिले हैं जहां पर औसत बारिश सामान्य से 45 प्रतिशत कम हुई है। चना का रकबा वैसे ही पिछले पांच सालों से आधे से कम रह गया है। सरसों का रकबा पिछले साल की तुलना में दो लाख हेक्टेयर बढ़ाया गया है। चालू रबी में कुल रकबा लगभग सामान्य क्षेत्र के बराबर है।

चालू रबी सीजन किसानों, कृषि वैज्ञानिकों एवं नीति निर्धारकों के लिये अत्यधिक चुनौतीपूर्ण है। प्रदश के चौथाई जिलों में जहां पर पानी की कमी है वहीं आधे से अधिक जिलों में अत्यधिक बारिश के कारण स्थिति विपरीत है। प्रदेश का पूर्वी क्षेत्र जो पहले से ही अत्यधिक बारिश से परेशान है, समुद्री तूफान 'अर्नब' ने परेशानी और बढ़ा दी है। अधिकांश स्थानों पर भारी बारिश के कारण धान की फसल को नुकसान हुआ है। रबी फसलों की बुवाई पर भी विपरीत असर पड़ा है। तेज बारिश होने से रबी बुवाई कम से कम दस दिन और आगे बढ़ गई है। उन क्षेत्रों को इस बेमौसम बारिश से जरूर फायदा हुआ है जहां पर पानी का अभाव था। कई असिंचित क्षेत्रों में इस बारिश से फसलें बोई जा सकेंगी। रबी फसलों की बेहतर बुवाई किसान भाई कर सकें इसके लिये शासन एवं स्थानीय प्रशासन का सजग रहना अत्यधिक जरूरी है। गेहूं की कम पानी वाली उन्नत किस्मों के बीज का प्रबंध समय रहते किया जाना आवश्यक है। जिन क्षेत्रों में बांधों में पानी उपलब्ध है उसे स्थानीय आवश्यकता अनुसार छोड़ा जाना चाहिये। दलहनी एवं तिलहनी फसलों को अधिक से अधिक बोने की सलाह किसानों को मिलनी चाहिये। कृषि आदान विशेषकर उर्वरकों की पर्याप्त व्यवस्था की जानी चाहिये। किसानों को हर संभव सुविधायें जैसे नियमित विद्युत आपूर्ति इत्यादि किये जाने की जरूरत है।

आईपीएल की किसान संगोष्ठी आयोजित गेहूं उत्पादन तकनीकों की दी जानकारी

नर्मदापुरम। इंडियन पोटाश लिमिटेड (आईपीएल) द्वारा ग्राम भट्टी में किसान संगोष्ठी आयोजित की गई। इसमें 77 किसानों एवं प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया। कार्यक्रम में संतुलित उर्वरक उपयोग, मृदा स्वास्थ्य संरक्षण और गेहूं की उन्नत उत्पादन तकनीकों की जानकारी दी गई।



कार्यक्रम में आईपीएल के एस.एस. सोलंकी ने कंपनी की गतिविधियों, किसान कल्याण के लिए संचालित पहलों और उर्वरक बाजार की स्थिति की जानकारी दी। उन्होंने किसानों को यूरिया एवं डीएपी पर अत्यधिक निर्भरता कम कर एनपीके और अमोनियम सल्फेट जैसे उर्वरकों के संतुलित उपयोग की सलाह दी। साथ ही एमओपी, पॉलीहैलाइट और पीडीएम के उपयोग से मिट्टी की सेहत एवं फसल उत्पादन में सुधार के बारे में बताया। वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. के.के. मिश्रा ने गेहूं की उन्नत किस्मों, संतुलित खाद प्रबंधन और कीट एवं रोग नियंत्रण की जानकारी दी। उन्होंने फसल में होने वाले प्रमुख रोगों की पहचान तथा उनके बचाव और उपचार के उपाय भी बताए। संगोष्ठी का आयोजन एवं संचालन आईपीएल के जिला विपणन अधिकारी अमितेश मिश्रा ने किया। समापन अवसर पर किसानों ने अपने सुझाव एवं अनुभव साझा किए तथा कार्यक्रम को उपयोगी बताया। इसके बाद प्रतिभागियों ने सामूहिक भोज में सहभागिता की।

वैज्ञानिकों ने फसल प्रबंधन और खेती की लागत घटाने के बताये तरीके



धार। कृषि विज्ञान केंद्र, धार द्वारा विकासखंड तिरला के ग्राम अडवी में आगामी रबी मौसम को ध्यान में रखते हुए एक दिवसीय रबी कृषक संगोष्ठी आयोजित की गई। केंद्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ. एस.एस. चौहान के मार्गदर्शन में आयोजित कार्यक्रम में लगभग 70 प्रगतिशील किसानों ने भाग लिया। संगोष्ठी में रबी फसलों की उन्नत तकनीकों, वैज्ञानिक प्रबंधन और उत्पादन बढ़ाने के उपायों की जानकारी दी गई।

केंद्र की प्रसार वैज्ञानिक डॉ. अंकिता पाण्डेय ने गेहूं, चना, सरसों और मटर की उन्नत एवं रोग प्रतिरोधी किस्मों के चयन पर जोर दिया। उद्यानिकी वैज्ञानिक डॉ. डी.एस. मंडलोई ने संतुलित उर्वरक प्रबंधन की जानकारी देते हुए किसानों को मृदा स्वास्थ्य पत्रक की सिफारिशों के अनुसार रासायनिक उर्वरकों और पोषक तत्वों का उपयोग करने की सलाह दी। केंद्र के वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी रीतेश जैन ने कृषि विज्ञान केंद्र में संचालित मुर्गीपालन, बकरीपालन, गोपालन, उद्यानिकी और वर्मी कम्पोस्ट उत्पादन जैसी प्रदर्शन इकाइयों की जानकारी दी। संगोष्ठी के दौरान किसानों ने फसल रोग, खरपतवार नियंत्रण और जैविक खेती से संबंधित समस्यायें वैज्ञानिकों के समक्ष रखीं। वैज्ञानिकों ने समस्याओं के समाधान के लिए आवश्यक परामर्श दिया। इस अवसर पर कृषि महाविद्यालय, इंदौर के बीएससी चतुर्थ वर्ष के 14 रावे विद्यार्थी भी उपस्थित रहे।

फसल अवशेषों के उचित प्रबंधन से किसानों को कराया अवगत



शिवपुरी। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के कृषि प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान, जबलपुर के प्रायोजन तथा कृषि विज्ञान केंद्र, शिवपुरी के आयोजन में फसल अवशेष प्रबंधन एवं संरक्षित कृषि तकनीकों पर पांच दिवसीय कृषक प्रशिक्षण संपन्न हुआ। प्रशिक्षण में किसानों को धान, मक्का आदि खरीफ फसलों की कटाई के बाद फसल अवशेषों के समुचित प्रबंधन, उन्नत कृषि यंत्रों के उपयोग तथा मिट्टी में कार्बन तत्व बढ़ाने की तकनीकों की जानकारी दी गई। साथ ही गेहूं, चना और मसूर जैसी रबी फसलों की बुवाई के वैज्ञानिक तरीकों से अवगत कराया गया।

प्रशिक्षण के दौरान भोपाल स्थित भारतीय कृषि अभियांत्रिकी संस्थान के प्रधान वैज्ञानिक एवं तकनीकी हस्तांतरण विभाग प्रमुख डॉ. सी.एस. सहाय ने कृषि यंत्रों के माध्यम से फसल अवशेष प्रबंधन की तकनीकों की जानकारी दी। वहीं ग्वालियर के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ. शैलेन्द्र सिंह कुशवाह ने धान-गेहूं फसल चक्र में धान की कटाई के बाद बिना खेत की जुताई किए गेहूं की सीधी बुवाई की तकनीक और उसके परीक्षण परिणामों से किसानों को अवगत कराया। कृषि विज्ञान केंद्र, अशोकनगर के कृषि अभियांत्रिकी वैज्ञानिक डॉ. वी.के. जैन तथा कृषि विज्ञान केंद्र, देवास के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. के.एस. भार्गव ने पराली से जैव उत्पाद तैयार करने, उन्नत कृषि यंत्रों से बुवाई तथा संसाधन संरक्षण की तकनीकों पर ऑनलाइन व्याख्यान दिए। शिवपुरी के सहायक कृषि यंत्री डॉ. भगवान सिंह नरवरिया ने उन्होंने शासन की कस्टम हायरिंग योजना, जिले में स्थापित कस्टम हायरिंग केंद्रों तथा किसानों को उनसे मिलने वाले लाभों के बारे में बताया। कृषि विज्ञान केंद्र, शिवपुरी के प्रमुख डॉ. पुनीत कुमार के निर्देशन में प्रशिक्षण के नोडल अधिकारी डॉ. एम.के. भार्गव तथा सह-नोडल अधिकारी डॉ. पुष्पेंद्र सिंह एवं डॉ. नीरज कुशवाहा ने कृषि यंत्रों के उपयोग, सूक्ष्मजीवों की सहायता से डीकंपोजर द्वारा पराली के अपघटन तथा रबी फसलों की लाभकारी बुवाई तकनीकों की जानकारी दी।

अनमोल वचन

कामनाओं की पूर्ति का प्रयास करने पर उनका कोलाहन और बढ़ता है। – स्वामी विवेकानंद

पाक्षिक व्रत एवं त्यौहार

कार्तिक कृष्ण/शुक्ल विक्रम संवत 2083 ईस्वी सन् 2026

दिनांक	दिन	तिथि	व्रत/ त्यौहार
03 नवम्बर 26	मंगलवार	कार्तिक कृष्ण 9	
04 नवम्बर 26	बुधवार	कार्तिक कृष्ण 10	
05 नवम्बर 26	गुरुवार	कार्तिक कृष्ण 11	रमा एकादशी
06 नवम्बर 26	शुक्रवार	कार्तिक कृष्ण 12	धनतेरस, प्रदोष व्रत
07 नवम्बर 26	शनिवार	कार्तिक कृष्ण 13	शिव चतुर्दशी (छोटी दीवाली)
08 नवम्बर 26	रविवार	कार्तिक कृष्ण 14	दीवाली
09 नवम्बर 26	सोमवार	कार्तिक कृष्ण 30	अन्नकूट, अमावस्या
10 नवम्बर 26	मंगलवार	कार्तिक शुक्ल 1	
11 नवम्बर 26	बुधवार	कार्तिक शुक्ल 2	भाई दूज
12 नवम्बर 26	गुरुवार	कार्तिक शुक्ल 3	
13 नवम्बर 26	शुक्रवार	कार्तिक शुक्ल 4	
14 नवम्बर 26	शनिवार	कार्तिक शुक्ल 5	
15 नवम्बर 26	रविवार	कार्तिक शुक्ल 6	सूर्यषष्टी व्रत
16 नवम्बर 26	सोमवार	कार्तिक शुक्ल 7	

'महावीरा जिरोन पावर प्लस' के साथ हर खेत में होगी चना की बरसात



● प्रमोद कुमार पाण्डेय
सीनियर जीएम (हेड एग्रोनामिस्ट)
आरएमपीसीएल
इंदौर (म.प्र.)

चना की फसल से उत्पादन कम मिलने के कारण पिछले कुछ सालों से चना का रकबा कम होता जा रहा है। चने का उत्पादन बढ़ाने का उपाय ढूंढा है उर्वरक उद्योग की प्रमुख कंपनी आरएमपीसीएल ने। कंपनी ने गहन अनुसंधान करके 'महावीरा जिरोन पावर प्लस' खाद उपलब्ध करवाया है जो चने का उत्पादन एवं गुणवत्ता बढ़ाने में सक्षम है।

'महावीरा जिरोन पावर प्लस' में उपलब्ध छः पोषक तत्व फास्फोरस, कैल्शियम, सल्फर, जिंक, बोरोन एवं मैग्नीशियम फसल को सभी आवश्यक पोषक तत्व उपलब्ध कराते हैं। चना बुवाई के समय मात्र ढाई बैग (125 किलोग्राम) 'महावीरा जिरोन पावर प्लस' उपयोग करके अधिकतम उत्पादन लिया जा सकता है। बुवाई के पूर्व बीजोपचार जरूर करें। इसके लिये ढाई ग्राम कार्बेन्डाजिम अथवा मेन्कोजेब प्रति किलो बीज की दर से उपचारित बीज ही बोयें। 'महावीरा जिरोन पावर प्लस' के उपयोग से उत्पादित चने की गुणवत्ता सर्वश्रेष्ठ होने से बाजार भाव सबसे अधिक मिलता है साथ ही चना पोषण से भरपूर रहता है।

कैल्शियम (Ca)19%

जड़ों के विकास एवं पौधे के अंगों की रचना के लिये एवं कोशिकाओं का अभिन्न तत्व होने से पौधों में मजबूती प्रदान करता है।

फॉस्फोरस (P)16%

जड़ों की वृद्धि के लिये महत्वपूर्ण है। यह चने की फसल में जीवाणुओं द्वारा वातावरण से ज्यादा नाइट्रोजन स्थिर करने में सहायक होता है।

सल्फर (S)11%

मिट्टी की उर्वरा शक्ति बढ़ाता है साथ ही यह पौधों में कीटनाशक एवं टॉनिक की तरह काम करता है।

मैग्नीशियम (Mg)0.5%

पौधे को हरा-भरा एवं स्वस्थ्य रखने का कार्य करता है।



जिंक Zn)0.5%

नवीन अंगों के निर्माण, पोटैशियम एवं कैल्शियम अनुपात को नियंत्रित करके फूलों एवं फलों को गिरने से रोकता है।

बोरॉन (B)0.2%

चने में फूल एवं फल लगने की प्रक्रिया को तेज करता है।

बीजोपचार

बुवाई के पूर्व बीजोपचार अवश्य करें।

बुवाई का समय

20 अक्टूबर से 15 नवंबर तक

खाद की मात्रा

'महावीरा जिरोन पावर प्लस' ढाई बैग (125 किलोग्राम) प्रति एकड़ बुवाई के समय प्रयोग करें।

सिक्स इन वन खाद

छः प्रमुख पोषक तत्व कैल्शियम, फास्फोरस, सल्फर, जिंक, बोरोन एवं मैग्नीशियम से भरपूर।

उत्पादन

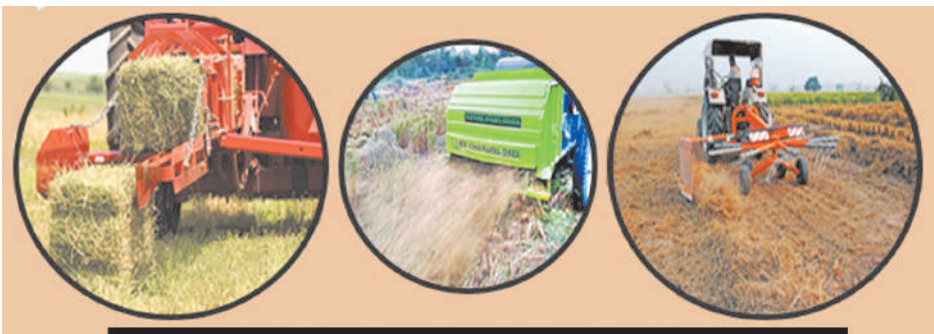
10 से 12 क्विंटल प्रति एकड़ पायें।

बीज दर

30 से 35 किलो प्रति एकड़

संतुलित पोषण = बेहतर उत्पादन = अधिक मुनाफा
अधिक जानकारी के लिये कंपनी के कस्टमर केयर नं. 8956926412 पर संपर्क किया जा
Mahaveera
RMPCL The Nutrition Company

● राजेंद्र पटेल ● ब्रजेश कुमार नामदेव
● संजीव कुमार गर्ग ● देवीदास पटेल
● रंजीत धाकड़
कृषि विज्ञान केंद्र गोविंदनगर
नर्मदापुरम (म.प्र.)



फसल अवशेष प्रबंधन की वैज्ञानिक तकनीकें

भारत एक कृषि प्रधान देश है जहाँ कृषि न केवल देश के अधिकतर लोगों की आजीविका का आधार है, बल्कि देश की खाद्य सुरक्षा और ग्रामीण अर्थव्यवस्था की रीढ़ भी है। हरित क्रांति के बाद देश में आधुनिक कृषि पद्धतियों, उत्पादन, उन्नत कृषि यंत्रों तथा फसल कटाई की तकनीकों के विकास के साथ खेतों में फसल अवशेषों की मात्रा भी बढ़ी है।

जिसमे मुख्यत: धान, गेहूँ, मक्का एवं अन्य फसलों की कटाई के बाद खेतों में बचने वाले डंठल, पत्तियां, भूसा, तना और अन्य जैविक पदार्थों या पराली को फसल अवशेष कहा जाता है। इन फसल अवशेषों का उचित प्रबंधन कृषि उत्पादन प्रणाली को टिकाऊ बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

इंडियन एग्रीकल्चरल रिसर्च इंस्टीट्यूट डैशबोर्ड के डेटा के अनुसार 2025 में मध्य प्रदेश में 15 सितंबर से 30 नवंबर के बीच धान के अवशेष जलाने की लगभग 17,067 घटनाएं दर्ज की गईं जो की देश में सबसे अधिक किसी एक प्रदेश में होने वाली घटनाओं में से है ।

फसल अवशेष प्रबंधन का अर्थ एवं महत्व

वैज्ञानिक फसल अवशेष प्रबंधन से मृदा में जैविक कार्बन बढ़ाने, नमी संरक्षण, पोषक तत्वों के पुनर्चक्रण, मृदा संरचना सुधारने तथा दीर्घकालीन उत्पादकता बनाए रखने में सहायता मिलती है। यह प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण और जलवायु-अनुकूल कृषि को बढ़ावा देने का भी एक प्रभावी माध्यम है।

फसल अवशेष जलाने से होने वाले नुकसान

फसल अवशेषों को खेत में जलाना एक आसान लेकिन हानिकारक विकल्प है। इससे अनेक प्रकार की समस्याएं उत्पन्न होती हैं।

- **वायु प्रदूषण:** अवशेष जलाने से धुआँ, सूक्ष्म कण तथा विभिन्न गैसें निकलती हैं जो वायु की गुणवत्ता को प्रभावित करती हैं और मानव स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हो सकती हैं।
- **मृदा की उर्वरता में कमी:** आग के कारण सतह पर मौजूद जैविक पदार्थ तथा कुछ उपयोगी पोषक तत्व नष्ट हो सकते हैं। बार-बार आग लगाने से मृदा के जैविक स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। अवशेषों के साथ उनमें मौजूद उपयोगी जैविक पदार्थ और पोषक तत्व भी नष्ट हो जाते हैं।
- **लाभकारी जीवों को नुकसान:** मृदा में पाए जाने वाले उपयोगी जीवाणु, कवक, केंचुए तथा अन्य जीव मृदा की उर्वरता और पोषक तत्वों के चक्रण में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। आग इनकी सक्रियता और संख्या को प्रभावित कर सकती है।
- **ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन:** फसल अवशेष जलाने से कार्बन डाइऑक्साइड. मीथेनए नाइट्रस ऑक्साइड तथा अन्य प्रदूषकों का उत्सर्जन हो सकता है, जिससे जलवायु परिवर्तन की समस्या बढ़ती है।

फसल अवशेष प्रबंधन की प्रमुख वैज्ञानिक विधियां

वैज्ञानिक एवं प्रभावी प्रबंधन की विधियाँ

- **डीकंपोजर का प्रयोग:** फसल अवशेषों पर बायो-डीकंपोजर (जैसे पूसा डीकंपोजर: का छिड़काव करके उन्हें रोटावेटर या कल्टीवेटर की मदद से मिट्टी में मिला दें। यह कुछ ही हफ्तों में अवशेषों को गलाकर उपजाऊ जैविक खाद में बदल देता है।
- **मल्चिंग:** फसल अवशेषों की एक परत को खेत की सतह पर बिछा दिया जाता है। इससे मिट्टी में नमी बनी रहती है, खरपतवार कम उगते हैं और वाष्पीकरण रुकता है।
- **कम्पोस्टिंग:** खेत से अलग किसी स्थान पर फसल अवशेषों को गोबर, हरी घास और पानी के साथ मिलाकर परत-दर-परत ढेर लगाएं। इससे कुछ समय बाद बेहतरीन पोषक तत्वों वाली जैविक खाद तैयार हो जाती है।
- **पशुओं के चारे और बिछौने के रूप में:** धान या गेहूं के अवशेषों को सूखा या प्रोसेस करके पशुओं के चारे में उपयोग किया जाता है। इसके अलावा इन्हें पशुओं के बैठने के लिए बिछौने के रूप में भी काम में लिया जाता है।

औद्योगिक एवं अन्य उपयोग

- **बायोचार:** बिना ऑक्सीजन के अवशेषों को गर्म करके बायोचार बनाया जाता है, जो मिट्टी की कार्बन धारण क्षमता बढ़ाता है।
- **मशरूम उत्पादन:** धान के पुआल (पराली) का उपयोग मशरूम की खेती के लिए उत्तम आधार के रूप में किया जाता है।
- **कागज/गत्ता और बायो-एनर्जी:** इनका उपयोग पेपर मिलों में लुगदी बनाने या बायोमास पावर प्लांट में बिजली/ईंधन उत्पादन के लिए किया जाता है।

फसल अवशेष प्रबंधन में आधुनिक कृषि यंत्रों की भूमिका

फसल अवशेषों का वैज्ञानिक प्रबंधन प्रभावी बनाने में कृषि यंत्रीकरण का विशेष महत्व है। हैप्पी सीडर, सुपर सीडर, स्मार्ट सीडर, स्ट्रॉ मैनेजमेंट सिस्टम, मल्चर, रोटावेटरए बेलर तथा श्रेडर जैसे यंत्र विभिन्न परिस्थितियों में उपयोगी हो सकते हैं।

इन यंत्रों के माध्यम से अवशेषों को काटने, फैलाने, एकत्र करने, मिट्टी में मिलाने अथवा अवशेषों के बीच बुवाई करने में सहायता मिलती है। छोटे और सीमांत किसानों के लिए कस्टम हायरिंग सेंटर, किसान उत्पादक संगठन तथा सहकारी संस्थाओं के माध्यम से कृषि यंत्र उपलब्ध कराना विशेष रूप से उपयोगी हो सकता है।

- **निष्कर्ष:** फसल अवशेष कोई बेकार पदार्थ नहीं बल्कि कृषि व्यवस्था का एक महत्वपूर्ण जैविक संसाधन हैं। इनका उचित प्रबंधन मृदा स्वास्थ्य सुधारने, पोषक तत्वों के पुनर्चक्रण, प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण तथा कृषि को अधिक टिकाऊ बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है। फसल अवशेष जलाने से होने वाले नुकसान को कम करने के लिए किसानों में जागरूकता, आधुनिक कृषि यंत्रों की उपलब्धता, वैज्ञानिक प्रशिक्षण और स्थानीय परिस्थितियों के अनुकूल तकनीकों को अपनाना आवश्यक है।

एनआईबीएसएम में सत्यनिष्ठा की शपथ

रायपुर। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद-जैविक प्रतिबल प्रबंधन राष्ट्रीय संस्थान, रायपुर में सतर्कता जागरूकता सप्ताह 2026 का शुभारंभ हुआ। इस वर्ष सप्ताह की थीम 'सत्यनिष्ठा से समृद्धि' रखी गई है। इस अवसर पर संस्थान के निदेशक डॉ. पी.के. राय ने वैज्ञानिकों, अधिकारियों एवं कर्मचारियों को सत्यनिष्ठा की शपथ दिलाई।



डॉ. राय ने कहा कि ईमानदारी, पारदर्शिता और नैतिक आचरण सुशासन एवं राष्ट्रीय विकास के प्रमुख आधार हैं। उन्होंने सभी अधिकारियों और कर्मचारियों से अपने शासकीय दायित्वों का निर्वहन पूरी निष्ठा, ईमानदारी और जवाबदेही के साथ करने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि संस्थान में पारदर्शी, प्रभावी और भ्रष्टाचार-मुक्त कार्य संस्कृति को बढ़ावा देना आवश्यक है। संस्थान के सतर्कता अधिकारी एवं संयुक्त निदेशक डॉ. पंकज शर्मा ने बताया कि सप्ताह के दौरान विभिन्न जागरूकता गतिविधियां आयोजित की जाएंगी। इसके तहत अधिकारी एवं कर्मचारी केंद्रीय सतर्कता आयोग (सीवीसी) की वेबसाइट के माध्यम से ऑनलाइन सत्यनिष्ठा प्रतिज्ञा भी लेंगे। सप्ताह भर चलने वाले अभियान में बैनर एवं पोस्टर प्रदर्शन, सोशल मीडिया के माध्यम से जागरूकता का प्रसार तथा सतर्कता संबंधी विषयों और लोक प्रशासन में नैतिक मूल्यों पर संगोष्ठी आयोजित की जाएगी।

इन गतिविधियों का उद्देश्य निवारक सतर्कता के प्रति जागरूकता बढ़ाना, लोक सेवा में जवाबदेही को प्रोत्साहित करना तथा नैतिक एवं पारदर्शी प्रशासन को मजबूत बनाना है। संस्थान के माध्यम से संस्थागत उत्कृष्टता और राष्ट्रीय समृद्धि में योगदान देने के लिए ईमानदारी एवं उत्तरदायित्व की संस्कृति को बढ़ावा दिया जाएगा।

नरवाई प्रबंधन के लिए किसानों को किया गया जागरूक

रायसेन। फसल अवशेष प्रबंधन परियोजना के अंतर्गत कृषि विज्ञान केंद्र, रायसेन द्वारा सीहोर जिले के बुधनी विकासखंड के ग्राम नारायणपुर एवं भैरूंदा विकासखंड के ग्राम मनासा में नरवाई प्रबंधन पर जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किये गये। कार्यक्रम में किसानों को फसल अवशेषों को जलाने के बजाय आधुनिक कृषि यंत्रों और वैज्ञानिक तकनीकों से उनका उचित प्रबंधन करने की जानकारी दी गई। कार्यक्रम में कृषि विज्ञान केंद्र, रायसेन के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. स्वप्निल दुबे, सीआरएम परियोजना के प्रभारी डॉ. मकुल कुमार, मृदा वैज्ञानिक डॉ. रंजीत सिंह राघव, सहायक कृषि यंत्री सीहोर योगीराज सावकर, जे.जे. फार्म के शिवम ठाकुर तथा वरिष्ठ कृषि विकास अधिकारी प्रमुख रूप से उपस्थित रहे।

डॉ. स्वप्निल दुबे ने कहा कि फसल कटाई के बाद खेतों में बचे अवशेषों (नरवाई) को जलाने से वायु प्रदूषण बढ़ता है और मिट्टी में मौजूद लाभकारी सूक्ष्मजीवों को नुकसान पहुंचता है। इसके विपरीत, फसल अवशेषों का वैज्ञानिक प्रबंधन मिट्टी की उर्वरता बढ़ाने और पर्यावरण संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। सीआरएम परियोजना के प्रभारी डॉ. मुकुल कुमार ने नरवाई प्रबंधन के लिए सुपर सीडर, स्ट्रॉ मैनेजमेंट सिस्टम (एसएमएस), स्ट्रॉ रीपर, बेलर, जैविक अपघटक, मल्चर, श्रेडर और रोटावेटर जैसी तकनीकों की जानकारी दी। मृदा वैज्ञानिक डॉ. रंजीत सिंह राघव ने बताया कि जैविक अपघटकों के उपयोग से फसल अवशेषों को जैविक खाद में बदला जा सकता है। सहायक कृषि यंत्री योगीराज सावकर ने कहा कि नरवाई का वैज्ञानिक प्रबंधन मिट्टी में जैविक पदार्थों की मात्रा बढ़ाने के साथ भूमि की उर्वरता और मृदा स्वास्थ्य सुधारने में सहायक है। कार्यक्रम में कृषि विज्ञान केंद्र, रायसेन एवं कृषि विभाग, सीहोर द्वारा किसानों से अपील की गई कि वे नरवाई न जलाएं, बल्कि आधुनिक कृषि यंत्रों और वैज्ञानिक तकनीकों के माध्यम से फसल अवशेषों का उचित प्रबंधन करें।

● प्रद्युम्न कुमार सिंह
शोध छात्र, पादप रोग विज्ञान विभाग
बांदा कृषि एवं प्रौद्योगिक
विश्वविद्यालय, बांदा (उ.प्र.)



कुकुरबिटेसी कुल की सब्जियों में लगने वाले प्रमुख रोग एवं उनका निदान



कुकुरबिटेसी कुल सब्जी एवं फलवर्गीय फसलों का एक महत्वपूर्ण कुल है। इस कुल में खीरा, ककड़ी, लौकी, करेला, कद्दू, तोरई, चिचिंडा, पेठा, खरबूजा एवं तरबूज आदि प्रमुख फसलें शामिल हैं। इन फसलों का देश के विभिन्न भागों में बड़े पैमाने पर उत्पादन किया जाता है।

कुकुरबिटेसी फसलों में विभिन्न प्रकार के फफूंद, जीवाणु और विषाणु जनित रोग पाए जाते हैं। ये रोग पौधों की वृद्धि, पत्तियों की प्रकाश-संश्लेषण क्षमता, फल बनने की प्रक्रिया तथा फल की गुणवत्ता को प्रभावित करते हैं। कुछ रोग अनुकूल मौसम में बहुत तेजी से फैलकर उत्पादन में भारी कमी कर सकते हैं।

रोगों की रोकथाम के लिए समेकित रोग प्रबंधन अपनाना आवश्यक है।

चूर्णिल आसिता / पाउडरी मिल्ड्यू

- **रोगकारक:** मुख्यत: पोडोस्फैरा तथा एरीसिफी समूह के फफूंद।
- **लक्षण:** इस रोग में पत्तियों की सतह पर सफेद चूर्ण जैसी परत दिखाई देती है। प्रारंभ में छोटे-छोटे सफेद धब्बे बनते हैं, जो बाद में पूरी पत्ती पर फैल सकते हैं। संक्रमित पत्तियां धीरे-धीरे पीली होकर सूखने लगती हैं। रोग की अधिकता में पौधे की वृद्धि एवं फल उत्पादन प्रभावित होता है।

निदान एवं प्रबंधन

- रोगमुक्त एवं प्रमाणित बीज का प्रयोग करें।
- खेत में पौधों की उचित दूरी रखें।
- अत्यधिक नाइट्रोजन के प्रयोग से बचें।
- संक्रमित पत्तियों को तोड़कर खेत से बाहर नष्ट करें।
- खेत में हवा का उचित आवागमन बनाए रखें।
- आवश्यकता होने पर संबंधित फसल के लिए अनुमोदित फफूंदनाशी का प्रयोग कृषि विशेषज्ञ की सलाह के अनुसार करें।

डाउनी मिल्ड्यू

- **रोगकारक:** स्यूडोपेरोनोस्पोरा क्यूबेन्सिस
- **लक्षण:** पत्तियों पर छोटे पीले या हल्के हरे धब्बे दिखाई देते हैं। ये धब्बे बाद में कोणीय आकार के हो जाते हैं। पत्ती की निचली सतह पर अधिक नमी की स्थिति में धूसर या बैंगनी रंग की फफूंद जैसी वृद्धि दिखाई दे सकती है। रोग की गंभीर अवस्था में पत्तियाँ तेजी से सूख जाती हैं और पौधे की फल उत्पादन क्षमता कम हो जाती है।

निदान एवं प्रबंधन

- खेत में उचित वायु संचार बनाए रखें।
- अधिक नमी से बचें।
- पत्तियों पर बार-बार पानी डालने से बचें।
- संक्रमित पत्तियों को हटाकर नष्ट करें।
- रोग की प्रारंभिक अवस्था में उचित अनुमोदित फफूंदनाशी का प्रयोग करें।
- एक ही रसायन का लगातार प्रयोग न करें।

एन्थ्रेक्नोज

- **रोगकारक:** मुख्यत: कोलेटोट्राइकम प्रजातियां।
- **लक्षण:** पत्तियों पर छोटे भूरे रंग के धब्बे बनते हैं। बाद में ये धब्बे बड़े हो जाते हैं। फलों पर गोलाकार, धंसे हुए भूरे या काले धब्बे दिखाई देते हैं। अधिक नमी में इन धब्बों पर गुलाबी या नारंगी रंग के बीजाणु समूह दिखाई दे सकते हैं।

निदान एवं प्रबंधन

- प्रमाणित एवं स्वस्थ बीज का प्रयोग करें।
- बीज उपचार की अनुशंसित विधि अपनाएं।
- संक्रमित फल एवं पौध अवशेषों को खेत से हटाएं।
- उचित फसल चक्र अपनाएं।
- खेत में जलभराव न होने दें।
- आवश्यकता के अनुसार अनुमोदित फफूंदनाशी का प्रयोग करें।

फल एवं तना सड़न

- **लक्षण:** तने के निचले भाग में भूरे या काले रंग के घाव दिखाई देते हैं। संक्रमित फल पर पानी से भीगे हुए धब्बे बनते हैं और बाद में फल सड़ने लगता है। अधिक नमी, जलभराव तथा संक्रमित मिट्टी रोग को बढ़ावा देती है।

निदान एवं प्रबंधन

- खेत में उचित जल निकास रखें।
- जलभराव से बचें।
- संक्रमित फलों को तुरंत तोड़कर नष्ट करें।
- फलों को सीधे मिट्टी के संपर्क में आने से बचाएं।
- स्वस्थ बीज का प्रयोग करें।
- आवश्यकता होने पर विशेषज्ञ की सलाह से अनुमोदित फफूंदनाशी का प्रयोग करें।

फ्यूजेरियम विल्ट

- **रोगकारक:** फ्यूसेरियम प्रजातियां।
- **लक्षण:** रोगग्रस्त पौधों की निचली पत्तियां पीली होने लगती हैं। धीरे-धीरे पौधा मुरझाने लगता है। गंभीर अवस्था में पूरा पौधा सूख सकता है। तने को काटने पर संवहनी ऊतक भूरे रंग के दिखाई दे सकते हैं।

निदान एवं प्रबंधन

- रोगमुक्त बीज का प्रयोग करें।
- उचित फसल चक्र अपनाएं।
- जलभराव से बचें।
- संक्रमित पौधों को निकालकर नष्ट करें।
- जैविक नियंत्रण के लिए अनुशंसित ट्राइकोडर्मा आधारित उत्पादों का प्रयोग किया जा सकता है।
- उपलब्ध होने पर रोगरोधी किस्मों/रूटस्टॉक का प्रयोग करें।

जीवाणु जनित कोणीय पत्ती धब्बा रोग

- **लक्षण:** पत्तियों पर छोटे पानी जैसे धब्बे दिखाई देते हैं। बाद में ये धब्बे कोणीय आकार के हो जाते हैं। संक्रमित ऊतक सूखकर गिर सकता है और पत्तियों में छोटे छेद दिखाई दे सकते हैं। कुछ परिस्थितियों में फल भी प्रभावित होते हैं।

निदान एवं प्रबंधन

- रोगमुक्त बीज का प्रयोग करें।
- संक्रमित पौधों एवं अवशेषों को नष्ट करें।
- खेत में अत्यधिक नमी से बचें।
- ऊपर से सिंचाई करने से बचें।
- पौधों के बीच उचित दूरी रखें।
- रोग की पहचान होने पर स्थानीय कृषि विशेषज्ञ की सलाह से अनुशंसित नियंत्रण उपाय अपनाएं।

विषाणु जनित मोजेक रोग

- **रोगकारक:** कुकुरबिटेसी फसलों में कई विषाणु रोग पाए जाते हैं, जिनमें कुकुम्बर मोजेक वायरस, वॉटरमेलन मोजेक वायरस तथा जुकिनी येलो मोजेक वायरस महत्वपूर्ण हैं।
- **लक्षण:** पत्तियों पर हल्के एवं गहरे हरे रंग की चितकबरी आकृति दिखाई देती है। पत्तियां सिकुड़ सकती हैं और उनका आकार छोटा हो सकता है। पौधे की वृद्धि रुक जाती है तथा फल छोटे, विकृत या असामान्य आकार के हो सकते हैं।
- **रोग का प्रसार:** इनमें से कई विषाणु रोगों का प्रसार एफिड (माहू) जैसे रस चूसने वाले कीटों द्वारा होता है। खरपतवार भी कुछ विषाणुओं के वैकल्पिक पोषक हो सकते हैं।

(शेष पृष्ठ 19 पर)





● डॉ. राजाराम त्रिपाठी
कृषि तथा ग्रामीण अर्थव्यवस्था विशेषज्ञ तथा राष्ट्रीय संयोजक अखिल भारतीय किसान महासंघ (आईफा)

'राष्ट्रीय एकता दिवस' 31 अक्टूबर पर विशेष लेख

अखंड भारत का सपना और बिखरते समाज की हकीकत

सरदार पटेल की मूर्ति से नहीं, विचारों से बनेगी राष्ट्रीय एकता

भारत की पहचान सदियों से उसकी विविधता में रही है। अनेक धर्म, भाषायें, जातियां, संस्कृतियां, वेशभूषायें और जीवन पद्धतियां होने के बावजूद एक राष्ट्र के रूप में उसका अस्तित्व दुनिया के लिए आश्चर्य और आकर्षण का विषय रहा है।

लेकिन आज एक असहज सवाल सामने खड़ा है। क्या हम सचमुच एक राष्ट्र के रूप में पहले से अधिक एकजुट हो रहे हैं या राजनीतिक स्वार्थों की खेती में अलगाववाद की फसल को खाद-पानी दे रहे हैं? अखंड भारत का सपना केवल भौगोलिक सीमाओं की अखंडता से पूरा नहीं होगा, उसके लिए नागरिकों के दिलों में भी एकता अखंडता की भावना जरूरी है।

1857 से विभाजन तक, इतिहास के सबक

1857 की क्रांति इसका सबसे बड़ा उदाहरण है। हिंदू, मुसलमान और विभिन्न जातियों के लोगों ने अंग्रेजी हुकूमत के विरुद्ध साझा संघर्ष किया। बहादुरशाह जफर के नाम से जारी घोषणाओं में हिंदुओं और मुसलमानों को एक साथ संघर्ष का आह्वान किया गया था। अंग्रेजों ने इस साझा प्रतिरोध की शक्ति को पहचाना। बाद में 1909 के मॉर्ले-मिंटो सुधारों ने मुसलमानों के लिए पृथक निर्वाचन की व्यवस्था करके सांप्रदायिक राजनीतिक प्रतिनिधित्व को संस्थागत रूप दिया। मुस्लिम लीग की स्थापना 30 दिसंबर 1906 को ढाका में और अखिल भारतीय हिंदू महासभा का गठन 1915 में हुआ। इन संगठनों को अंग्रेजों ने संरक्षण तथा प्रोत्साहन दिया। इनकी विभाजनकारी नीतियों ने सामुदायिक राजनीतिक ध्रुवीकरण को पर्याप्त बढ़ावा दिया।

15 अगस्त 1947 को देश आजाद हुआ, लेकिन विभाजन की कीमत लाखों लोगों ने जान देकर और करोड़ों ने विस्थापन झेलकर चुकाई। 3 जून 1947 की माउंटबेटन योजना और 18 जुलाई 1947 के भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम ने विभाजन का रास्ता प्रशस्त किया। इसके लिए किसी एक नेता या समुदाय को दोषी ठहराकर इतिहास का सरलीकरण करना उचित नहीं होगा। ब्रिटिश औपनिवेशिक नीति, सांप्रदायिक राजनीति और तत्कालीन नेतृत्व के राजनीतिक निर्णय, सभी की निष्पक्ष समीक्षा जरूरी है। अंग्रेज चले गए, लेकिन विभाजन की मानसिकता आज भी हमारे बीच कहीं न कहीं जीवित है।

भाषा और क्षेत्र की दीवारें, एक देश के भीतर अनेक देश

आज भाषा के नाम पर जो कटुता दिखाई देती है, वह राष्ट्रीय एकता के लिए गंभीर चुनौती है। अंग्रेजों की नीति को ही आगे बढ़ते हुए 1956 के राज्य पुनर्गठन अधिनियम के माध्यम से राज्यों का व्यापक पुनर्गठन भाषाई आधार पर हुआ। भाषा को प्रशासनिक सुविधा और सांस्कृतिक पहचान का आधार बनाना गलत नहीं था, लेकिन उसे दूसरे भारतीयों से घृणा का आधार बना देना निश्चित रूप से गलत है।

संरक्षण के नाम पर अलगाव, और वोट के नाम पर विभाजन

राष्ट्रीय एकता को नुकसान केवल धर्म और भाषा की राजनीति से नहीं पहुंच रहा, बल्कि क्षेत्रीय और सामाजिक पहचान के नाम पर भी खाइयां लगातार गहरी की जा रही हैं। दक्षिण में धार्मिक समुदायों के बीच पहचान की राजनीति हो या बस्तर में आदिवासी और ईसाई समुदायों के बीच बढ़ते तनाव, अथवा आदिवासी और गैर-आदिवासी के बीच अविश्वास, इन सबका समाधान टकराव नहीं, संवाद और समान न्याय है। जो बस्तर कभी शांति और सहअस्तित्व की मिसाल रहा, वहां सामाजिक तनाव की घटनाएं चिंता का विषय हैं।

आदिवासी जमीन की रक्षा के लिए बनाए गए प्रतिबंधों का उद्देश्य ऐतिहासिक शोषण से समुदाय को बचाना था, लेकिन उनके क्रियान्वयन में ऐसी गंभीर खामियां हैं कि जरूरत पड़ने पर आदिवासी अपनी ही जमीन का उचित व प्रतिस्पर्धी मूल्य प्राप्त न कर सकता। आदिवासी जमीनों की तमाम रजिस्ट्रयों के दस्तावेज को उठाकर देखें तो पाएंगे कि आदिवासियों की जमीन कौड़ियों के मूल्य बिक रही है, और शोषण करने वाले वाले चुनिंदा लोग भी उन्हीं की समुदाय के हैं। जमीन की सुरक्षा का अर्थ यह नहीं कि आदिवासी को बेहतर आर्थिक विकल्पों से भी वंचित कर दिया जाए। समाधान पारदर्शी मूल्यांकन, उचित मुआवजे, कानूनी संरक्षण और समुदाय की वास्तविक सहमति में है। बेहतर तो यह होता कि यह सुनिश्चित किया जाता कि, ऐसी नौबत ही ना आने पाए कि किसी आदिवासी को अपनी जमीन बेचनी पड़े।

इसी तरह पेसा कानून, 1996 का उद्देश्य अनुसूचित क्षेत्रों में ग्रामसभा को अधिकार देना और आदिवासी स्वशासन को मजबूत करना है। इसे पूरे देश के हर गांव में बाहरी नागरिकों के प्रवेश पर रोक लगाने वाला कानून बताना, भोले-भाले लोगों की भीड़ इकट्ठा करके कोई भी कार्य व्यवसाय न करने देना तथ्यात्मक रूप से गलत होगा। लेकिन इसके नियमों और स्थानीय क्रियान्वयन में अनावश्यक प्रतिबंध और भ्रम पैदा हो तो उनकी समीक्षा आवश्यक है।

छत्तीसगढ़ में छत्तीसगढ़िया और बाहरी का प्रश्न उठाकर लोगों के बीच दूरी पैदा करना भी खतरनाक है। संविधान का अनुच्छेद 19(1)(डी) और (ई) प्रत्येक नागरिक को देश में स्वतंत्र रूप से घूमने, रहने और बसने का अधिकार देता है, युक्तिसंगत संवैधानिक प्रतिबंधों के अधीन। छत्तीसगढ़ का बाजार, उद्योग और जीवन देश के दूसरे राज्यों से आने वाले उत्पादों, सेवाओं और श्रमिकों से जुड़ा है। चावल के अतिरिक्त दाल, तेल, नमक, मसाले, मशीनरी, दवाइयां, वाहन और दैनिक उपयोग की असंख्य वस्तुएं दूसरे राज्यों से आती हैं। यहां के लोग भी दूसरे राज्यों में काम करते हैं। यदि हर प्रदेश अपने दरवाजे बंद कर ले तो हमारे अपने नागरिकों का भविष्य क्या होगा?

छत्तीसगढ़िया और बाहरी के नाम पर खाई

'छत्तीसगढ़ सबले बढ़िया' का नारा हर छत्तीसगढ़िया की भांति मुझे भी बहुत प्रिय है। लेकिन जरा सोचिए कि क्या इसका निहितार्थ यह है कि छत्तीसगढ़िया अगर सबसे बढ़िया है, तो देश के तो बाकी सभी प्रदेशों के लोग क्या उनसे कमतर हैं या घटिया हैं? छत्तीसगढ़ में धान, कुछ दलहन-तिलहन और मक्का आदि काफी कुछ पैदा होता है, लेकिन कई तरह के अनाज मसाले फल ड्राई फ्रूट, खाद, बीज, दवाइयों से लेकर साइकिल, मोटरगाड़ी, मोबाइल और रोजमर्रा की अनगिनत जरूरतों के लिए हम दूसरे राज्यों पर भी निर्भर हैं। सच यह है कि हर प्रदेश एक-दूसरे का पूरक है, इसी परस्पर निर्भरता से भारत बना है। आज हम दूसरों के लिए दरवाजे बंद करेंगे, कल दूसरे प्रदेश हमारे लिए बंद कर देंगे। फिर न छत्तीसगढ़ की अस्मिता बचेगी, न राष्ट्रीय एकता। अपनी मिट्टी से प्रेम कीजिए, मगर उसके नाम पर देश की जमीन में नफरत के बीज मत बोइए। क्षेत्रीय वैमनस्य फैलाकर राजनीतिक फसल काटने वाले ऐसे तत्वों पर कठोर कार्रवाई होनी चाहिए।

किसी भी प्रदेश के नागरिक का केवल उसकी क्षेत्रीयता, बोली, भाषा, संस्कृति अथवा धर्म के आधार पर अपमान करने का अधिकार किसी व्यक्ति, संस्था या राजनीतिक संगठन को कदापि नहीं है। अपनी नेतागिरी चमकाने और वोटों का ध्रुवीकरण करने के लिए ऐसे हथकंडों का इस्तेमाल आज तेजी से बढ़ रहा है। जब हम सत्ता के लालच में विभिन्न वर्गों के बीच इसी तरह पक्षपात और भेदभाव करते रहेंगे, नफरत के बीज होते रहेंगे तो राष्ट्रीय एकता की बात छोड़िए, गांव और मोहल्ले में भी एकता संभव नहीं होगी।

एकता की असली ताकत, संस्थाएं और साझा नागरिकता

राष्ट्रीय एकता के निर्माण में आकाशवाणी, दूरदर्शन, भारतीय सिनेमा, रेलवे, डाक विभाग, दूरसंचार और अखिल भारतीय सेवाओं ने महत्वपूर्ण योगदान दिया है। भारतीय सेना तो इसकी सबसे जीवंत मिसाल है। देश के हर क्षेत्र, भाषा, धर्म और समुदाय के युवा एक ही वर्दी पहनकर राष्ट्र की रक्षा करते हैं। जब सीमा पर संकट आता है, तब कोई सैनिक यह नहीं पूछता कि उसके साथ खड़ा जवान किस भाषा में बोलता है या किस प्रदेश से आया है। यही भारत की असली शक्ति है। विदेशी आक्रमणों के समय भी भारत ने बार-बार अपने आंतरिक मतभेद भुलाकर एक राष्ट्र के रूप में खड़े होने की क्षमता दिखाई है।

पटेल की प्रतिमा नहीं, उनके विचारों की जरूरत

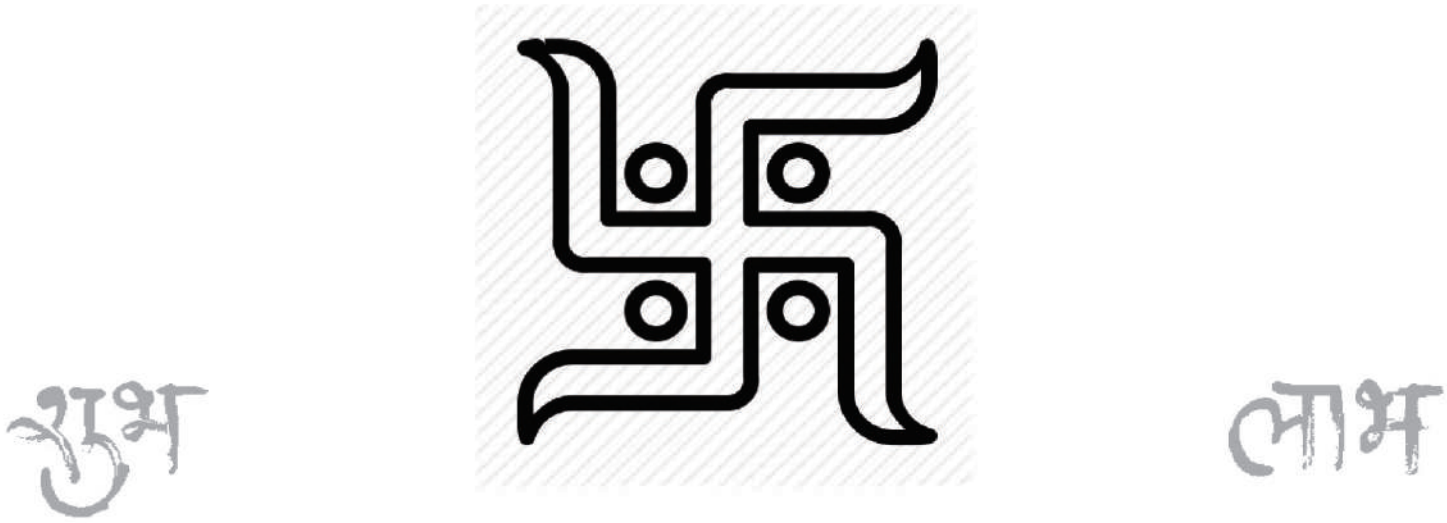
सरदार वल्लभभाई पटेल का जन्म 31 अक्टूबर 1875 को हुआ था। स्वतंत्रता के बाद 562 से अधिक रियासतों के भारत में एकीकरण में उनकी निर्णायक भूमिका रही। राष्ट्रीय एकता दिवस 2014 से उनकी जयंती 31 अक्टूबर के अवसर पर मनायी जा रही है। लेकिन उनकी विशाल प्रतिमा स्थापित कर देना ही उनके विचारों को आत्मसात कर लेना नहीं है। प्रतिमा पर्यटन स्थल बन सकती है, राष्ट्रीय-एकता नहीं। उसके लिए राजनीतिक दृढ़ इच्छाशक्ति, समुचित सामाजिक न्याय और नागरिकों के प्रति समान व्यवहार चाहिए।

सरदार पटेल के बाद राष्ट्रीय एकता के इस मूल तत्व को हमारी राजनीति ने कितनी गंभीरता से समझा और आगे बढ़ाया, यह आत्ममंथन का विषय है। राजनीतिक दलों की चुनावी रणनीतियां जब जाति, धर्म, भाषा, क्षेत्र और समुदाय के आधार पर मतों के ध्रुवीकरण तक सीमित हो जाती हैं, तब राष्ट्रहित पीछे छूट जाता है। लोकतंत्र का उद्देश्य केवल सत्ता हासिल करना नहीं, बल्कि नागरिकों के अधिकारों, स्वतंत्रता और गरिमा की रक्षा करना भी है। चुनाव से पहले जनता के दरवाजे पर हाथ जोड़ने वाले हमारे गरीब देश नेता चुनाव के बाद दर्जनों गाड़ियों के काफिले के साथ उसी जनता को रास्ते से हटवाते हैं। क्या यही जनसेवा है? क्या सत्ता त्याग और उत्तरदायित्व का माध्यम है या विशेषाधिकारों का स्थायी लाइसेंस? राजनेताओं के ऊपर प्रति घंटे किए जा रहे सैकड़ों करोड़ रुपयों के खर्चे के एक-एक पैसे का हिसाब मांगने का जनता को हक है और उनके कथित जनसेवा के अनमोल समय के प्रत्येक मिनट और सेकंड का सदुपयोग जनता के हित में वास्तविक रूप से कितना हो रहा है, इसका हिसाब मांगना भी नागरिकों का लोकतांत्रिक अधिकार है।

राष्ट्रीय-एकता किसी एक दिन की शपथ, निबंध प्रतियोगिता या भाषण का विषय नहीं है। यह हमारे रोजमर्रा के आचरण, कानूनों की निष्पक्षता, शिक्षा की दृष्टि और राजनीतिक चरित्र की परीक्षा है। हमें हर निर्णय से पहले स्वयं से पूछना होगा कि इससे मेरा देश मजबूत होगा या कमजोर?

आखिर कब तक हम बबूल के बीज बोकर आम की फसल की उम्मीद करते रहेंगे? क्या भारत को अपनी एकता सिद्ध करने के लिए हर बार किसी विदेशी आक्रमण की प्रतीक्षा करनी पड़ेगी? राष्ट्र केवल नारों से नहीं, कर्म, न्याय, त्याग और उत्तरदायित्व से चलता है।

राष्ट्र सर्वोपरि है, लेकिन राष्ट्र केवल जमीन का टुकड़ा, या भूगोल का एक नक्शा नहीं, बल्कि उसके नागरिकों का परस्पर विश्वास भी है। जब तक यह विश्वास अक्षुण्ण नहीं होगा, अखंड भारत का सपना अधूरा रहेगा।



उत्तम चौघड़िया-अमृत, शुभ, लाभ तथा चर है। खराब चौघड़िया- उद्वेग, रोग व काल है।

दिन की चौघड़ियाँ							समय	रात की चौघड़ियाँ						
रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	दिन-रात	रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	6 से 7.30 तक	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	7.30 से 9 तक	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग
लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	9 से 10.30 तक	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	10.30 से 12 तक	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत
काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	12 से 1.30 तक	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर
शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	1.30 से 3 तक	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	3 से 4.30 तक	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	4.30 से 6 तक	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ



NEW HOLLAND

ट्रैक्टर्स की ओर से कृषक दूत के सभी पाठकों को धनतेरस एवं दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएं

कृषक दूत

दिव्य त्योहारों का उत्सव, न्यू हॉलैंड की दमदार ताकत के संग।







असली हीरो की असली ताक़त

न्यू हॉलैंड ट्रैक्टर पर ऑफर पाने के लिए मिस्ड कॉल करें

मिस्ड कॉल नं.
8956198607

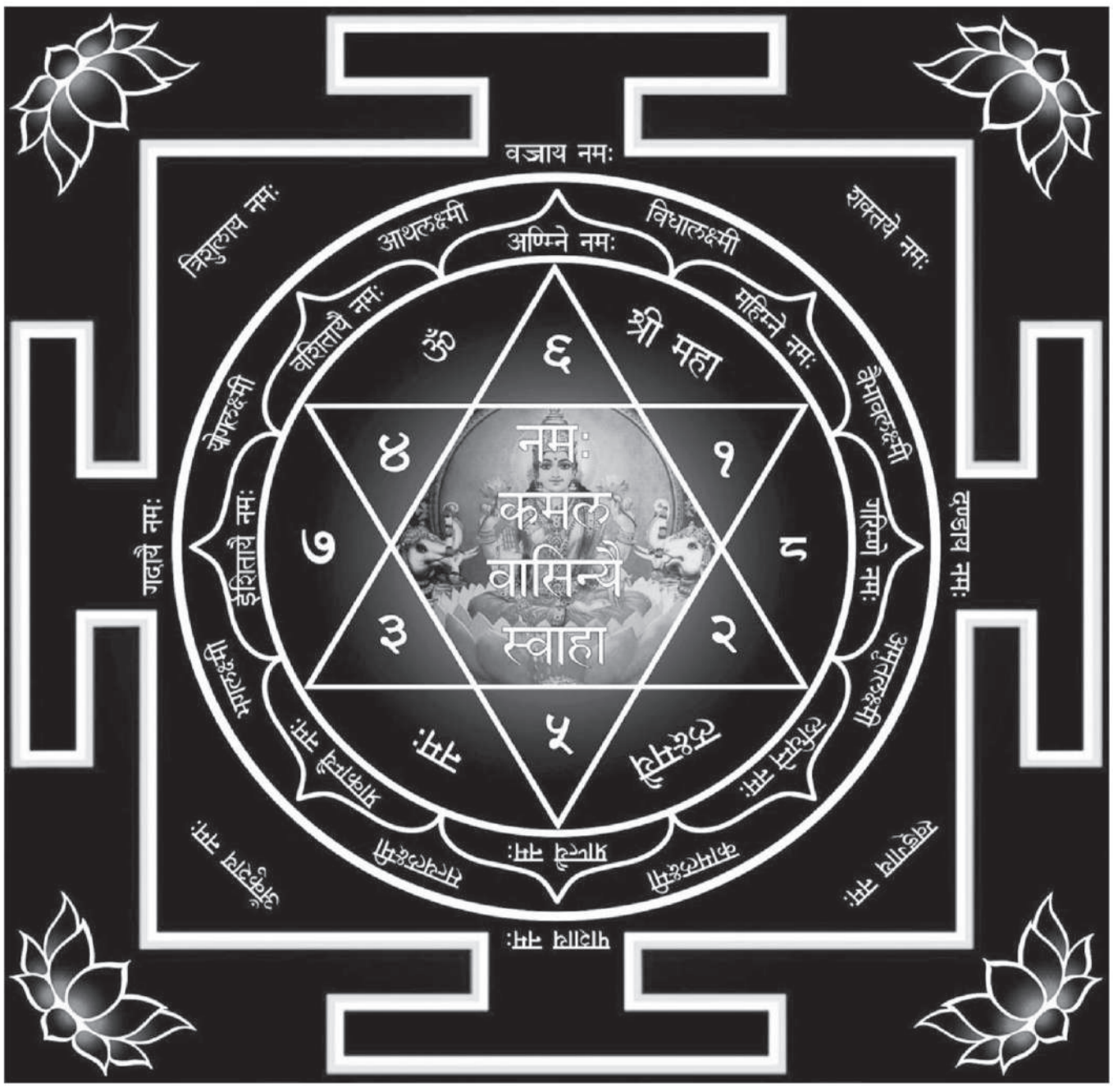
6 साल T-वारंटी#

नियम व शर्तें लागू।

#6 साल की T-वारंटी Workmaster 105, Blue Series Simba 30 और Blue Series Simba 20 पर लागू नहीं है। दिखाए गए उत्पादों के चित्र केवल दृष्टांत उद्देश्य के लिए हैं और उत्पाद का सटीक प्रतिनिधित्व नहीं करते। चुनाव नहीं किया जा सकता है। इनका रंग वास्तविक उत्पाद से अलग हो सकता है।

In-house Finance
CNH CAPITAL

शुभ लाभ


वज्राय नमः
त्रिशुलाय नमः
आथलक्ष्मी
अग्निने नमः
विधालक्ष्मी
शक्तये नमः
वशितायै नमः
ॐ
श्री महा
महिम्ने नमः
योगलक्ष्मी
नमः
कमल
वासिन्यै
स्वाहा
वैभवलक्ष्मी
गदायै नमः
ईशितायै नमः
दण्डाय नमः
पाशाय नमः

शुभ लाभ

Coromandel
FUTURE POSITIVE

ग्रोमोर

GroPlus

सर्वोत्तम तकनीक
सफलता का प्रतीक

EnPhos TECHNOLOGY

P फास्फोरस
B बोरॉन
Ca कैल्शियम
S सल्फर
Zn जिंक



हमारे यूट्यूब चैनल को Subscribe करें

ग्रोप्लस अब आ गया है **एनफॉस तकनीक** के साथ!

जिसमें है **5 अमूल्य** पोषक तत्वों की शक्ति!

जो अधिक और गुणवत्ता युक्त उत्पादन सुनिश्चित करें

Coromandel
FUTURE POSITIVE

GROMOR





क्योंकि हम किसान जानते हैं,
सब हमारे भरोसे हैं,
इसलिए हमारा भरोसा!
GROMOR

जिनके भरोसे दुनिया,
उनका भरोसा ग्रोमोर



Coromandel
FUTURE POSITIVE

GROMOR

अब डीएपी की बोरी करो कम और बाद में दो

ग्रोमोर नैनो डीएपी का दम।

ज़्यादा नहीं सही पोषण



- बेहतर अवशोषण
- संतुलित पोषण
- मिटटी का बेहतर स्वास्थ्य
- ज्यादा लाभ
- आसान उपयोग
- उन्नत तकनीक

Scan and subscribe

दीपावली में कमल का महत्व

कीचड़ में खिलने वाला पुष्प कमल भारतीय संस्कृति में सौभाग्य का प्रतीक माना जाता है। इसी पुष्प पर विराजमान लक्ष्मी सौभाग्यदायी है। एक पुरानी मान्यता के अनुसार लक्ष्मी की उत्पति भी कमल पुष्प से मानी गई है, इसीलिए उन्हें पद्मना भी कहा जाता है।



श्रीसूक्त में लक्ष्मी को पद्मिनी, पद्मवर्णा, पद्मा और पद्महस्ता आदि नामों से संबोधित किया जाता है। आदिकाल से ही कमल पुष्प सबका मन मोह लेने वाला रहा है। हमारे धार्मिक ग्रंथों में से पुष्पों का राजा कहा गया है। सिंधुघाटी, मोहनजोदड़ो की खुदाई में प्राप्त अवशेषों व मोहरों पर कमल के चित्र अंकित होना इसकी महत्ता को और अधिक बढ़ा देते हैं। पुपरातात्विक स्तंभों पर भी इस पुष्प का अंकन हुआ है। ऐतिहासिक गुफाओं के भीत्ति चित्रों में इसका प्रयोग स्पष्ट दिखाई देता है। पुरातन प्रतिमाओं में लक्ष्मी और कमल के संबंध को आत्मीयता के साथ दर्शाया गया है। हमारे देश के कवियों ने भी अपनी रचनाओं और काव्यों में कमल का भरपूर वर्णन किया है। संत तुलसीदास ने तो भगवान राम के शारीरिक सौंदर्य को कमल की उपमा से ही अलंकृत किया है।

नव कंज लोचन कंज मुख, कर कंज पद कंजारूणम्

कमल भारतीय धर्म, दर्शन एवं संस्कृति का प्रतीक रहा है। यह मानव जाति को यह संदेश देता है कि मनुष्य को कीचड़ में रहते हुए भी उसमें डूबना नहीं चाहिए। अर्थात् मानव को संसाररूपी मोह-माया और लालच के कीचड़ में रहते हुए भी निस्वार्थभाव से मानव धर्म अपनाते हुए कमल की भांति हमेशा ऊंचे उठे रहना चाहिए। भारतीय भाषाओं में इसे अनेक नामों से जाना जाता है। खिले हुए कमल का सौंदर्य देखकर कोई भी व्यक्ति आकर्षित हुए बिना नहीं रह पाता है। इसी कारण भारतीय देवी-देवताओं ने इसे अपना प्रिय पुष्प बनाया है। भारत के राष्ट्रीय चिन्ह अशोक स्तंभ के शीर्ष में भी कमल का स्वरूप दिखाई देता है।

देवग्रहों में भी कमल की सुंदर आकृतियां अलंकृत की गई है। कीचड़ में खिलने वाला यह पुष्प संसार के सभी धर्मों एवं संस्कृति में आदर प्राप्त है। लक्ष्मी प्रिय होने के कारण हिन्दू धर्म में यह विशेष पूजनीय है।

2 नवंबर को बुधादित्य व लक्ष्मी नारायण योग

चांदी के सिक्के, लक्ष्मी-गणेश की प्रतिमा, बर्तन, वाहन, लोहा, मशीनरी, जमीन-मकान और नए बही-खाते खरीद सकते हैं। पूजा सामग्री, चंदन, इत्र, कौड़ी, शंख, स्वस्तिक, मिट्टी के दीपक व श्रीयंत्र की खरीदारी भी शुभ मानी जाती है।

2 से 6 नवंबर तक शुभ योग: 2 नवंबर को बुधादित्य व लक्ष्मी नारायण योग रहेंगे। 3 नवंबर को गजकेसरी योग और 4 नवंबर को ब्रह्म योग रहेगा। ब्रह्म योग में पूजन सामग्री और धार्मिक पुस्तकें खरीदना शुभ माना गया है। 5 नवंबर को रमा एकादशी रहेगी। इस दिन भी खरीदारी की जा सकती है।

धनतेरस पर झाड़ू खरीदने की परंपरा: 6 नवंबर को धनतेरस है। इसे अबूझ मुहूर्त वीली तिथि माना जाता है। इस दिन लोग अपनी सामर्थ्य के अनुसार सोने-चांदी के आभूषण, सिक्कें और पीतल, तांबे व चांदी के बर्तन खरीदते हैं। झाड़ू खरीदने की भी परंपरा है। मान्यता है कि इससे घर की नकारात्मकता और दरिद्रता दूर होती है। साबुत धनिया खरीदकर मां लक्ष्मी को अर्पित करने और बाद में घर में रखने की परंपरा भी है। धनतेरस पर नमक खरीदना भी शुभ माना जाता है।









लक्ष्मी पूजन की विधि



आसन पर लक्ष्मी-गणेश को रखें। देवी के आगे सिक्के, गल्ला, बही खाते, नया खाता रखें। देवी को सूखा धनिया, गुड़, बताशे, चावल (लावा) का भोग शुभ माना जाता है। लक्ष्मी के साथ सरस्वती और कुबेर भी होते हैं।

पूजन विधि : अपने ऊपर, आसन और पूजन सामग्री पर 3-3 बार कुशा या पुष्पादि से छिड़काव कर यह शुद्धिकरण मंत्र पढ़ें-

ॐ अपवित्रः पवित्रोवा सर्वावस्थां गतोऽपिवा।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं सबाह्याभ्यंतर शुचिः।।

यह मंत्र पढ़ते हुये आचमन करें और हाथ धोएं...

ॐ केशवाय नमः, ॐ माधवाय नमः, ॐ नारायणाय नमः

पुनः आसन शुद्धि मंत्र बोलें-

ॐ पृथ्वी त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुनाधृता।
त्वं च धारयमां देवि पवित्रं कुरु चासनम्।।

अनामिका अंगुली से चंदन/रोली लगाते हुये यह मंत्र पढ़ें-

चन्दनस्य महात्पुण्यम् पवित्रं पापनाशनम्,
आपदां हस्ते नित्यम् लक्ष्मी तिष्ठतु सर्वदा।



कलश पूजा

कलश में सिक्का, सुपारी, दुर्वा, अक्षत, तुलसी पत्र और जल भरकर कलश पर आम पल्लव रखें। नारियल पर वस्त्र लपेटकर कलश पर रखें।

हाथ में अक्षत-पुष्प लेकर वरुण देवता का आह्वान मंत्र पढ़ें-

आगच्छ भगवान देव स्थाने चात्र स्थिरो भव।
यावत् पूजा समप्ती तावत्वं सुस्थीरो भव।।



श्री गणेश पूजा

पहले गणेश जी की पूजा इस मंत्र से करें।

गजाननम्भूतगणादिसेवितं कपित्थ जम्बू फलचारूभक्षणम्।
उमासुतं शोक विनाशकारकं नमामि विघ्नेश्वरपादपंकजम्।।

हाथ में अक्षत लेकर आवाहन मंत्र का जाप करें

ॐ गणपतये इहागच्छ इह तिष्ठ।।

अक्षत पात्र में अक्षत छोड़ें। गणेश जी को प्रसाद चढ़ायें। पान सुपारी, फूल अर्पित करें। कलश पूजन के बाद सभी कुबेर, इंद्र सहित सभी देवी-देवाताओं का स्मरण करें।

मां लक्ष्मी का ध्यान करें और मूल मंत्र पढ़ें-

लक्ष्मी पूजन विधि मंत्र



ॐ श्री महालक्ष्म्यै च विद्महे विष्णु पत्नै च धीमती तन्नो लक्ष्मी प्रचोदयात् ॐ।।

अब हाथ में अक्षत लेकर बोलें

ॐ भूर्भुवः स्वः महालक्ष्मी, इहागच्छ इह तिष्ठ, एतानि पाद्याद्याचमनीय-स्नानीयं, पुनराचमनीयम्।

स्नान करायें और वस्त्र अर्पित करें

प्रतिष्ठा के बाद स्नान करायें, चंदन लगायें। पुष्प चढ़ायें और माला पहनायें। दूध, शक्कर और सूखे मेवों का भोग लगायें। इदं रक्त वस्त्र समर्पयामि कहकर लाल वस्त्र पहनायें। फिर मां लक्ष्मी को प्रसाद अर्पित करें। पान, सुपारी चढ़ायें। मां लक्ष्मी श्रीसूक्त के 16 मंत्रों का पाठ करें।

मां सरस्वती का ध्यान करें और यह मूल मंत्र पढ़ें-

ॐ ब्रह्म पत्नीच विद्महे महावाण्यैच
धीमती तन्नः सरस्वती प्रचोदयात।।

फिर पुष्प अर्पित करते हुये मंत्र पढ़ें-

ॐ महालक्ष्मयै नमः

लक्ष्मी पूजन के बाद भगवान विष्णु का ध्यान करें।
ॐ नमो ब्रह्मण्य देवाय गो ब्राह्मण हिताय च,
जगदिताय कृष्णाय गोविन्दाय नमो नमः।
अब पूजन के बाद क्षमा प्रार्थना और आरती करें।
आवाहनं न जानामि, न जानामि तबार्चनम।
पूजं चैव न जानामि, क्षम्यताम् परमेश्वरं।।

दीपावली के पांच दिवसीय पर्व की तिथियां

धनतेरसः शुक्रवार, 6 नवंबर 2026
छोटी दीपावली (नरक चतुर्दशी) : शनिवार, 7 नवंबर 2026
दीपावली (लक्ष्मी पूजा): रविवार, 8 नवंबर 2026
गोवर्धन पूजा (अन्नकूट): मंगलवार, 10 नवंबर 2026
भाई दूजः बुधवार, 11 नवंबर 2026

लक्ष्मी पूजा का शुभ मुहूर्त

लक्ष्मी-गणेश पूजाः शाम 5:54 बजे से शाम 7:50 बजे तक।
प्रदोष कालः शाम 5:41 बजे से रात 8:17 बजे तक।
वृषभ लग्नः शाम 7:08 बजे से रात 9:03 बजे तक (विशेष मुहूर्तः शाम 7:08 बजे से रात 8:18 बजे तक)।
निशीथ काल (महानिशीथ काल पूजा): रात 11:44 बजे से रात 12: 36 बजे तक।
अमावस्या तिथि प्रारंभः 8 नवंबर 2026 को सुबह 11:27 बजे
अमावस्या तिथि समाप्तः 9 नवंबर 2026 को दोपहर 12:31 बजे

धनतेरसः शुक्रवार, 6 नवंबर 2026

त्रयोदशी तिथि प्रारंभः 6 नवंबर 2026 को सुबह 10:30 बजे से
त्रयोदशी तिथि समाप्तः 7 नवंबर 2026 को सुबह 10:47 बजे तक

पांच दिवसीय दीवाली का महत्व जानें

दीपावली सप्ताह का पहला दिन : धनतेरस

धनतेरस (धन्वंतरि त्रयोदशी) दीपावली सप्ताह का पहला दिन है, जो दीपावली उत्सव की शुरुआत का प्रतीक है। दरअसल, यह हिंदू कैलेंडर के अनुसार कृष्ण पक्ष का 13वां चंद्र दिन है, जो कार्तिक महीने का अंधेरा पखवाड़ा है।

धनतेरस एक विशेष दिन है, क्योंकि ऐसा माना जाता है कि भगवान धन्वंतरि इस दिन समुद्र से मानव जाति की भलाई के लिए आयुर्वेद, जो एक चिकित्सा विज्ञान माना जाता है, लेकर आए थे। इस दिन बड़ी संख्या में खरीदारी होती है, विशेष रूप से सोना, चांदी, कीमती पत्थर, गहने, नए कपड़े और बर्तन।

सूर्यास्त के समय हिंदू स्नान करते हैं और मृत्यु के देवता यमराज की सुरक्षा के लिए एक प्रज्वलित दीपक और प्रसाद (पूजा के दौरान दी जाने वाली मिठाई) के साथ प्रार्थना करते हैं। यह प्रसाद तुलसी के पेड़, पवित्र तुलसी या आंगन में किसी भी पवित्र पेड़ के पास रखा जाता है।

दीपावली का दूसरा दिन : छोटी दीपावली

काली चौदस या नरक चतुर्दशी, दीपावली सप्ताह के दूसरे दिन के रूप में जानी जाती है। इसे छोटी दीपावली भी कहते हैं। भारत के कुछ हिस्सों में दीपावली के दूसरे दिन मनाया जाता है यह त्योहार। ऐसा माना जाता है कि भगवान कृष्ण ने इस दिन दुनिया को आतंक से मुक्त करने के लिए नरकासुर राक्षस का वध किया था। ऐसा माना जाता है कि इस दिन वर्ष भर की थकान को दूर करने के लिए शरीर पर तेल से मालिश करके स्नान करना चाहिए ताकि दीपावली को जोश और करुणा के साथ मनाया जा सके। यह भी माना जाता है कि इस दिन आपको दीया नहीं जलाना चाहिए या अपने घर से बाहर नहीं निकलना चाहिए। हालांकि आधुनिक समय में छोटी दीपावली पर लोग 'एक खुशहाल, सफल दीपावली' की कामना करने के लिए एक-दूसरे के पास जाते हैं और उपहारों और मिठाइयों का आदान-प्रदान करते हैं।

दीपावली सप्ताह का तीसरा दिन : वास्तविक दीपावली दिवस

असली दीपावली, दीपावली के 5 दिनों के उत्सव में तीसरे दिन होती है। यह वह दिन है जब देवी लक्ष्मी और भगवान गणेश की पूजा की जाती है। हिंदू शुद्ध होकर अपने परिवार और पंडित (पुजारी) के साथ मिलकर देवी लक्ष्मी की पूजा करते हैं, ताकि समृद्धि और धन का आशीर्वाद, बुराई पर अच्छाई की जीत और अंधेरे पर प्रकाश की जीत हो। लोग अपने घरों में दीये और मोमबत्तियां जलाते हैं और पूरे भारत में लाखों पटाखे जलाए जाते हैं और सड़कों पर रंग-बिरंगी रोशनियां की जाती हैं।

दीपावली सप्ताह का चौथा दिन : दीपावली के बाद विश्वकर्मा पूजा

दीपावली पर्व के पांच दिनों में से चौथा दिन भारत में अलग-अलग तरीकों से मनाया जाता है। इस दिन को गुजरात जैसे पश्चिमी राज्य में अपने कैलेंडर के अनुसार नए वर्ष, बेस्टू वरस, के रूप में धूमधाम से मनाया जाता है।

उत्तरी भारतीय राज्यों में इस दिन लोग अपने उपकरणों और हथियारों की पूजा करते हैं, आमतौर पर गोवर्धन पूजा के दिन विश्वकर्मा पूजा भी होती है। इस दिन सभी व्यवसाय बंद रहते हैं। इस दिन को अन्नकूट के नाम से भी जाना जाता है। ऐसा कहा जाता है कि भगवान कृष्ण कई हजार साल पहले ब्रज के लोगों को गोवर्धन पूजा में लाए थे। तब से हर साल ब्रज लोगों की पहली पूजा के सम्मान में गोवर्धन की पूजा करते हैं।

दीपावली सप्ताह का 5 वां दिन : भाई दूज

दीपावली के 5 दिनों में से पांचवां दिन भाई दूज या भाई बीज दिवस के रूप में मनाया जाता है। वैदिक काल के दौरान यम (यमराज, मृत्यु के देवता) अपनी बहन यमुना के पास इसी दिन आए थे। उसने अपनी बहन को एक वरदान (वरदान) दिया कि जो व्यक्ति उस दिन उसके पास जाएगा, वह सभी पापों से मुक्त हो जाएगा और मोक्ष या परम मुक्ति प्राप्त करेगा।

तब से, भाई अपनी बहनों और उनके बच्चों का हालचाल जानने के लिए उनके पास जाते हैं, और बहनें अपने भाइयों के लिए प्यार की निशानी के रूप में मिठाइयां तैयार करती हैं।इस दिन दीपावली पर्व के पांच दिनों का समापन होता है।

(पृष्ठ 7 का शेष)

कुकुरबिटेसी....

निदान एवं प्रबंधन

▶ स्वस्थ एवं प्रमाणित बीज का प्रयोग करें। ▶ रोगग्रस्त पौधों को प्रारंभिक अवस्था में निकालकर नष्ट करें। ▶ खेत एवं आसपास के क्षेत्र को खरपतवार मुक्त रखें। ▶ एफिड जैसे वाहक कीटों की नियमित निगरानी करें। ▶ पीले चिपचिपे ट्रैप का प्रयोग निगरानी के लिए करें। ▶ विषाणु रोगों में रोकथाम को उपचार से अधिक महत्व दें।

कुकरबिटेसी फसलों में रोगों की रोकथाम के सामान्य उपाय

▶ **स्वस्थ बीज का प्रयोग:** बुवाई के लिए प्रमाणित, स्वस्थ एवं रोगमुक्त बीज का उपयोग करें। ▶ **बीज उपचार:** फसल एवं रोग के अनुसार अनुशंसित बीज उपचार अपनाएँ। ▶ **फसल चक्र:** एक ही खेत में लगातार कुकुरबिटेसी परिवार की फसलें न लगाएं। उचित फसल चक्र अपनाए। ▶ **खेत की स्वच्छता:** रोगग्रस्त पत्तियों, फलों और पौध अवशेषों को खेत में न छोड़ें। ▶ **जल निकास:** खेत में जलभराव न होने दें। क्यारियों एवं नालियों में उचित जल निकास की व्यवस्था करें। ▶ **संतुलित उर्वरक प्रयोग:** नाइट्रोजन का अत्यधिक प्रयोग न करें। फसल की आवश्यकता के अनुसार संतुलित पोषण दें। ▶ **खरपतवार नियंत्रण:** खरपतवारों को नियंत्रित रखें क्योंकि वे कई रोगजनकों एवं विषाणु वाहक कीटों के आश्रय स्थल बन सकते हैं। ▶ **नियमित निगरानी:** फसल का नियमित निरीक्षण करें और रोग के प्रारंभिक लक्षण दिखाई देने पर तुरंत नियंत्रण उपाय अपनाएं। ▶ **समेकित रोग प्रबंधन:** कुकुरबिटेसी फसलों में रोगों के प्रभावी नियंत्रण के लिए समेकित रोग प्रबंधन सबसे उपयोगी तरीका है। इसके अंतर्गत निम्न उपायों को एक साथ अपनाया जाता है। ▶ **स्वस्थ बीज- बीज उपचार-** उचित फसल चक्र- खेत की स्वच्छता- उचित सिंचाई- संतुलित पोषण- खरपतवार नियंत्रण- कीट वाहक नियंत्रण- जैविक नियंत्रण- आवश्यकता अनुसार अनुमोदित रसायनों का प्रयोग।रासायनिक दवाओं का प्रयोग करते समय केवल संबंधित फसल के लिए अनुमोदित उत्पाद, अनुशंसित मात्रा एवं लेबल निर्देशों का पालन करना चाहिए। दवाओं के प्रयोग के दौरान व्यक्तिगत सुरक्षा उपकरणों का उपयोग तथा निर्धारित प्रतीक्षा अवधि का पालन भी आवश्यक है। ▶ **निष्कर्ष:** कुकुरबिटेसी कुल की सब्जियां किसानों की आय एवं उपभोक्ताओं के पोषण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। परंतु पाउडरी मिल्ड्यू, डाउनी मिल्ड्यू, एन्थ्रेक्नोज, फल एवं तना सड़न, फ्यूजेरियम विल्ट, जीवाणु जनित पत्ती धब्बा तथा विषाणु जनित मोजेक रोग इन फसलों के उत्पादन को प्रभावित कर सकते हैं। इन रोगों की रोकथाम के लिए रोग की सही पहचान और समय पर प्रबंधन अत्यंत आवश्यक है। स्वस्थ बीज, फसल चक्र, खेत की स्वच्छता, उचित सिंचाई, संतुलित पोषण, खरपतवार एवं कीट नियंत्रण तथा जैविक और अनुमोदित रासायनिक उपायों को मिलाकर अपनाने से रोगों को प्रभावी रूप से नियंत्रित किया जा सकता है। इस प्रकार समेकित रोग प्रबंधन अपनाकर कुकुरबिटेसी फसलों में स्वस्थ पौध वृद्धि, बेहतर फल गुणवत्ता और अधिक उत्पादन प्राप्त किया जा सकता है।

किसानों को चना-मसूर के बीज किये वितरित

रतलाम। कृषि विज्ञान केंद्र, जावरा द्वारा निकरा परियोजना के अंतर्गत रबी 2026-27 के अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन कार्यक्रम एवं एससी-एसपी योजना के तहत 45 किसानों एवं महिला किसानों को चना और मसूर के बीज वितरित किये गये। इस अवसर पर संस्थागत प्रशिक्षण कार्यक्रम भी आयोजित किया गया। कार्यक्रम का आयोजन केवीके के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ. सर्वेश त्रिपाठी के मार्गदर्शन में किया गया। उन्होंने किसानों को चने की आरवीबी-204 एवं पूसा पार्वती तथा मसूर की एल-4727 किस्मों के बीजों को बुवाई से पहले उपचारित करने की विधि बताई। उन्होंने बीजोपचार के महत्व और फसल की बेहतर स्थापना के लिए अपनाई जाने वाली सावधानियों की जानकारी दी। निकरा परियोजना के सह-प्रधान अन्वेषक डॉ. रामधन घसवा ने चना एवं मसूर की उन्नत किस्मों की विशेषताओं के साथ फसलों में लगने वाले प्रमुख कीटों एवं रोगों की पहचान और उनके प्रबंधन के उपाय बताये।

वर्गीकृत विज्ञापन

कृषक दूत द्वारा सुधी पाठकों एवं लघु स्तर के विज्ञापनदाताओं के लिए वर्गीकृत विज्ञापन सुविधा शुरू की गई है। यदि आप अपनी आवश्यकता एवं उत्पाद सेवा की जानकारी कृषक दूत के 21 लाख पाठकों के बीच अत्यंत रियायती दर पर पहुंचाना चाहते हैं तो आप वर्गीकृत विज्ञापन का लाभ ले सकते हैं। वर्गीकृत विज्ञापन के नियम एवं शर्तें निम्नानुसार हैं।

★ 1500/- मात्र में चार बार विज्ञापन प्रकाशित किया जाएगा।
★ अधिकतम शब्दों की संख्या 30 होगी। इसके पश्चात् 2/- प्रति शब्द अधिकतम 45 शब्दों तक देय होगा।
★ वर्गीकृत विज्ञापन सेवा के अंतर्गत आने वाले विज्ञापन ही प्रकाशित किये जायेंगे।
★ वर्गीकृत विज्ञापन का भुगतान अग्रिम रूप से नकद/ मनीआर्डर/ बैंक ड्रॉफ्ट द्वारा करना होगा।
★ इसके अंतर्गत अधिकतम बुकिंग एक वर्ष तक भी की जा सकेगी।

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें :-

कृषक दूत
कृषि एवं ग्रामीण विकास का प्रमुख मासिक

एफ.एम. 16, ब्लाक सी, मानसरोवर कॉम्पलेक्स, रानी कमलापति रेल्वे स्टेशन के पास होशंगाबाद रोड, भोपाल (म.प्र.)
फोन : (0755) 4233824
मो. : 9827352535, 9425013875, 9300754675, 9826686078

समस्त किसान भाईयों एवं विक्रेताओं को
दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएं


प्रो. प्रदीप जैन

उच्च क्वालिटी के उर्वरक
खाद, बीज एवं
कीटनाशक दवाईयों के
अधिकृत विक्रेता


प्रखर जैन

नंद किशोर कोमलचन्द जैन
सब्जी मंडी नया बाजार, सागर जिला-सागर (म.प्र.)मो. 9425425228

विकसित भारत अभियान 1947 TO 2047
MDHP
माँ दंतेश्वरी हर्बल फार्म्स एंड रिसर्च सेंटर
SUSTAINABLE DEVELOPMENT GOALS

आपकी ज़मीन
आपका अगला बड़ा निवेश बन सकती है।
एक स्मार्ट प्लांटेशन मॉडल, जो दे
नियमित आय और दीर्घकालिक संपत्ति का मूल्य।

MDBP-16 Registered Variety

एक स्मार्ट प्लांटेशन मॉडल NGH (Registered)
ऑस्ट्रेलियन टीक — 800 पौधे प्रति एकड़
+
काली मिर्च — 800 पौधे प्रति एकड़

एक साल में (प्रति एकड़) रिटर्न
काली मिर्च (ब्लैक पेपर) का रिटर्न
₹8 से ₹15 लाख
प्रति एकड़

10 साल बाद (प्रति एकड़) रिटर्न

काली मिर्च (ब्लैक पेपर)	ऑस्ट्रेलियन टीक	कुल रिटर्न 10 साल बाद
₹80 लाख से ₹1.5 करोड़ तक	₹2 करोड़ से ₹3 करोड़ तक	₹3 करोड़ से ₹4.5 करोड़ तक

लगभग लागत (प्रति एकड़)

ऑस्ट्रेलियन टीक की लागत	काली मिर्च की लागत	मेंटेनेंस, अन्य खर्च आदि सहित लगभग कुल लागत
₹1.12 लाख	₹1.12 लाख	₹3 लाख

आपकी जमीन का संपूर्ण मूल्य चक्र
जमीन → प्लांटेशन → उत्पादन → आय → दीर्घकालिक संपत्ति

हमारा प्लांटेशन और उत्पादन चक्र
पहले हम ऑस्ट्रेलियन टीक लगाते है। → 6 महीने से 1 साल बाद हम ब्लैक पेपर (काली मिर्च) लगाते है। → 2.5 से 3 साल बाद ब्लैक पेपर उत्पादन देना शुरू कर देता है। → प्रति काली मिर्च पेड़ 6 से 7 किलो ब्लैक पेपर फ्रेटिंग (वार्षिक)

काली मिर्च 12 महीना इसका मांग रहता है।
हमेशा demand supply से ज्यादा रहता है।
एक ऑस्ट्रेलियन टीक 10 से 35 CFT का होता है।

यह वैज्ञानिक मॉडल देश के Society for Horticulture Research and Development (SHRD) द्वारा स्वीकृत तथा करंट हॉर्टिकल्चर रिसर्च जर्नल में प्रकाशित

विकसित भारत 2047 तथा वैश्विक Sustainable Development Goals (SDG-2047) के लक्ष्यों की प्राप्ति का यही है रोडमैप।

हमारी मान्यता एवं क्रेडेंशियल्स
भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त स्टार्टअप इंडिया | ISO 9001-20015 प्रमाणित संस्था | फार्मर्स इनोवेशन कार्टेलिस (FIC) द्वारा मान्यता प्राप्त | कई राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त | स्वयं का रिसर्च एवं डेवलपमेंट लैब

READY TO START YOUR PLANTATION?
BOOK YOUR PLANTING MATERIAL
Australian Teak
+ Black Pepper MDBP-16
(Registered Variety)
For Farmers, Industries, Agri Investors
0771-2263433,
9425265105


Our Expert Team

मुकेश सीड्स एण्ड जनरल सप्लायर्स
(कृषि-बागवानी सामग्री का विश्वसनीय प्रतिष्ठान)

●औषधीय●वन ●सब्जी●फूल●बीज●स्प्रे पंप एवं पार्ट्स ●कीटनाशक ●जैविक खाद ● गार्डन टूल ●जैविक उत्पाद ●ग्रीन नेट इत्यादि हर समय उचित कीमत पर उपलब्ध।
वितरक - ●निर्मल सीड्स, जलगांव ●कलश सीड्स, जालाना ●अंकुर सीड्स, नागपुर ● वेस्टर्न सीड्स, गुजरात ●दिनाकर सीड्स, गुजरात ●सटिंड सीड्स, दिल्ली ● फाल्कन गार्डन टूल्स, लुधियाना ●स्टिगा ग्रास ब्लेड, मुंबई ●जेनको गार्ड टूल्स, जालंधर ●स्काई बर्ड एग्रो इंडस्ट्रीज, अमृतसर ●अनु प्रोडक्ट्स लि. ●श्री सिद्धि एग्रो केम

112, नियर ओल्ड सेफिया कॉलेज रोड के पास, भोपाल टॉकीज रोड भोपाल (म.प्र.)
फोन : 0755-2749559, 5258088 E-mail : mukeshseed@gmail.com

- **गुरप्रीत सिंह,** कृषि कौशल संकाय
- **श्री विश्वकर्मा,** कौशल विश्वविद्यालय, दुधोला (पलवल)
- **माधुरी,** नेमेटोलॉजी विभाग कृषि विश्वविद्यालय, असम



खेती में निमेटोड समस्या

निमेटोड्स सूक्ष्म, कीड़े जैसे जीव होते हैं जो निमेटोडा से संबंधित हैं। ये मिट्टी, पानी और पौधों के ऊतकों में पाए जाते हैं और कृषि पारिस्थितिकी तंत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। कुछ निमेटोड्स फायदेमंद होते हैं क्योंकि वे पोषक तत्वों के चक्र और मिट्टी के स्वास्थ्य में योगदान करते हैं, जबकि पौधों पर परजीवी निमेटोड्स जड़ों और पौधों के अन्य हिस्सों को खाकर फसलों को नुकसान पहुंचाते हैं। ये दुनिया भर में कृषि को काफी नुकसान पहुंचाते हैं।

पौधों पर परजीवी निमेटोड्स के प्रकार

- निमेटोड्स की कई प्रजातियां कृषि के लिए हानिकारक कीट हैं।
- **रूटनॉट निमेटोड्स :** ये निमेटोड्स पौधों की जड़ों पर खास तरह की सूजन पैदा करते हैं जिन्हें गॉल कहा जाता है। ये टमाटर, बैंगन, भिंडी और कद्दूवर्गीय फसलों पर हमला करते हैं।
- **सिस्ट निमेटोड्स :** ये निमेटोड्स अंडे वाले सुरक्षात्मक सिस्ट बनाते हैं और प्रजाति के आधार पर गेहूं, सोयाबीन और आलू जैसी फसलों को नुकसान पहुंचाते हैं।
- **लीजन निमेटोड्स:** ये पौधों की जड़ों में घुस जाते हैं और भूरे रंग के घाव पैदा करते हैं, जिससे पानी और पोषक तत्वों का अवशोषण कम हो जाता है।
- **रेनिफॉर्म निमेटोड्स:** ये निमेटोड्स कपास और सोयाबीन जैसी फसलों को प्रभावित करते हैं और पौधों की वृद्धि और उत्पादकता को कम करते हैं।

निमेटोड्स से संक्रमित पौधों में आमतौर पर धीमी वृद्धि, पत्तियों का पीला पड़ना, मुरझाना, जड़ों का खराब विकास और कम पैदावार जैसे लक्षण दिखाई देते हैं। रूट-नॉट निमेटोड्स से साफ दिखने वाले गॉल बनते हैं, जबकि लीजन निमेटोड्स जड़ों पर गहरे रंग के क्षतिग्रस्त हिस्से बनाते हैं। संक्रमण खेत में अलग-अलग हिस्सों में हो सकता है। ये लक्षण पोषक तत्वों की कमी या जड़ों की अन्य बीमारियों जैसे हो सकते हैं, इसलिए सही पहचान जरूरी है।

आर्थिक महत्व

पौधों पर परजीवी निमेटोड्स जड़ों को नुकसान पहुंचाकर और पानी व पोषक तत्वों के अवशोषण में बाधा डालकर फसल की पैदावार और गुणवत्ता को कम करते हैं। वे मिट्टी से फैलने वाले कुछ रोगजनकों के प्रति पौधों की संवेदनशीलता भी बढ़ा सकते हैं। नतीजतनए किसानों को आर्थिक नुकसान और फसल सुरक्षा की बढ़ती लागत का सामना करना पड़ सकता है। हालांकि फायदेमंद निमेटोड्स पोषक तत्वों के चक्र में भाग लेकर और मिट्टी के अन्य जीवों की आबादी को नियंत्रित करके मिट्टी की उर्वरता बनाए रखने में मदद करते हैं।

निमेटोड का प्रबंधन

फसल उत्पादन के लिए इंटीग्रेटेड निमेटोड प्रबंधन जरूरी है। इसके मुख्य प्रबंधन तरीकों में शामिल हैं-

- **फसल चक्र:** नॉन-होस्ट फसलें उगाने से मिट्टी में निमेटोड की संख्या कम करने में मदद मिलती है।
- **प्रतिरोधी किस्में:** प्रतिरोधी किस्मों की खेती करने से निमेटोड से होने वाले नुकसान को रोका या सीमित किया जा सकता है।
- **जैविक नियंत्रण:** Purpureocillium lilacinum और Pochonia chlamydosporia जैसे फायदेमंद जीव कुछ पौधों पर पलने वाले निमेटोड को दबा सकते हैं।
- **जैविक सुधार:** अच्छी तरह से सड़ी हुई गोबर की खाद या कम्पोस्ट का इस्तेमाल करने से मिट्टी की सेहत बेहतर होती है और फायदेमंद सूक्ष्मजीवों को बढ़ावा मिल सकता है।
- **मिट्टी का सोलराइजेशन:** गर्म और धूप वाले मौसम में नम मिट्टी को पारदर्शी प्लास्टिक से ढकने से मिट्टी में पनपने वाले कुछ निमेटोड को दबाया जा सकता है।
- **रासायनिक नियंत्रण:** जरूरत पड़ने पर रजिस्टर्ड निमैटिसाइड्स का इस्तेमाल किया जा सकता है, लेकिन इसके लिए बताई गई मात्रा, लेबल पर दिए गए निर्देशों और सुरक्षा सावधानियों का पालन करना चाहिए।
- **खेत की सफाई:** स्वस्थ रोपण सामग्री का इस्तेमाल करने और उन खरपतवारों को नियंत्रित करने से, जो वैकल्पिक होस्ट का काम करते हैं, संक्रमण को रोकने में मदद मिल सकती है।

मप्र की जिलेवार रबी फसल बुवाई लक्ष्य एवं बोनी

जिला	सा.क्षे.	बोनी 2026	लक्ष्य 2026	जिला	सा.क्षे.	बोनी 2026	लक्ष्य 2026
जबलपुर	246.3	28.5	269.5	खंडवा	268.0	0.1	285.3
कटनी	236.1	1.7	237.1	बुरहानपुर	45.9	0.9	60.9
बालाघाट	115.1	1.2	127.0	अलीराजपुर	68.7	0.4	83.5
छिंदवाड़ा	361.8	3.5	336.8	**इंदौर सं.**	**1670.9**	**68.5**	**1707.1**
पांढुर्णा	8.4	0.2	30.4	उज्जैन	470.6	193.7	479.7
सिवनी	333.5	6.6	314.5	मंदसौर	300.7	22.5	315.0
मंडला	135.8	18.1	149.9	नीमच	139.0	8.6	150.0
डिंडोरी	141.3	5.1	161.9	रतलाम	288.1	9.1	275.8
नरसिंहपुर	317.3	7.5	304.4	देवास	384.4	27.1	377.5
जबलपुर सं.	**1896.0**	**72.4**	**1931.51**	शाजापुर	271.6	7.2	268.7
सागर	539.8	3.1	543.5	आगर	165.9	1.2	180.2
दमोह	314.3	1.5	318.1	**उज्जैन सं.**	**2020.3**	**269.5**	**2046.8**
पन्ना	253.1	4.8	251.1	मुरैना	277.3	15.0	267.1
टीकमगढ़	233.9	0.0	238.2	भिंड	336.1	20.0	335.0
निवाड़ी	81.3	0.0	82.9	श्योपुर कला	189.6	10.8	185.0
छतरपुर	495.1	13.8	480.0	**चंबल सं.**	**803.0**	**45.8**	**787.1**
सागर सं.	**1917.6**	**23.2**	**1913.79**	ग्वालियर	212.0	6.5	205.8
रीवा	357.5	2.2	270.8	शिवपुरी	441.7	9.3	447.6
मऊगंज	41.6	1.4	107.6	गुना	307.1	9.1	315.8
सीधी	142.2	0.6	146.9	अशोकनगर	285.1	4.4	294.3
सिंगरौली	137.7	0.2	131.5	दतिया	221.7	5.2	227.0
सतना	330.8	0.2	267.7	**ग्वालियर सं.**	**1467.6**	**34.6**	**1490.5**
मैहर	43.0	0.1	110.3	भोपाल	151.3	0.2	151.4
रीवा सं.	**1052.8**	**4.5**	**1034.79**	सीहोर	397.2	0.4	400.1
शहडोल	84.6	0.8	118.9	रायसेन	427.5	10.0	423.8
अनूपपुर	62.2	0.1	95.2	विदिशा	519.5	8.9	528.4
उमरिया	115.3	4.8	113.8	राजगढ़	466.1	0.0	483.6
शहडोल सं.	**262.1**	**5.7**	**327.87**	**भोपाल सं.**	**1961.6**	**19.5**	**1987.2**
इंदौर	223.2	17.0	229.0	नर्मदापुरम	333.0	0.0	333.3
धार	445.2	38.6	408.0	हरदा	194.6	0.3	181.5
झाबुआ	119.1	6.5	117.3	बैतूल	367.8	0.5	340.5
खरगोन	345.5	4.9	376.1	नर्मदापुरम सं.	895.5	0.8	855.4
बड़वानी	155.4	0.1	147.1	कुल योग	13946.9	544.36	14082.03

(क्षेत्र-हजार हेक्टेयर में)



छर्रा में ACE का किसान सम्मेलन, 400 से अधिक किसान जुटे, 6 ट्रैक्टरों की हुई डिलीवरी







छर्रा (अलीगढ़)। तहसील अतरौली क्षेत्र के छर्रा स्थित बालाजी ट्रैक्टर्स पर एक्शन कंस्ट्रक्शन इक्विपमेंट लिमिटेड (ACE) द्वारा एक दिवसीय ग्राहक मिलन समारोह व किसान सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में क्षेत्र के 400 से अधिक किसानों व ग्राहकों ने हिस्सा लिया, जबकि 54 स्थानीय ट्रैक्टर मैकेनिकों की मौजूदगी विशेष आकर्षण का केंद्र रही। समारोह के दौरान छह नए ACE ट्रैक्टरों की चाबियां ग्राहकों को सौंपी गईं। सम्मेलन का मुख्य उद्देश्य किसानों और मैकेनिकों को ACE ट्रैक्टरों की तकनीकी विशेषताओं, बेहतरीन माइलेज, कम रखरखाव खर्च और आधुनिक सेवा सुविधाओं से अवगत कराना था।

डीलरशिप के स्वामी अशोक कुमार एवं राजकुमार के नेतृत्व में बालाजी ट्रैक्टर्स पिछले लगभग दस वर्षों से आइशर ट्रैक्टरों का सफल व्यवसाय संचालित कर रहा था। अब यह प्रतिष्ठान, ACE समूह से जुड़कर क्षेत्र में अपने कारोबार का विस्तार कर रहा है। बालाजी ट्रैक्टर्स न केवल नए ट्रैक्टरों की बिक्री करेगा, बल्कि विभिन्न कंपनियों के स्पेयर पार्ट्स भी उपलब्ध कराएगा, जिससे स्थानीय किसानों को पुर्जों के लिए भटकना नहीं पड़ेगा।

कार्यक्रम में ACE के ट्रैक्टर व्यवसाय प्रमुख श्री रविंदर सिंह खनेजा, प्रशिक्षण एवं रणनीतिक विपणन प्रमुख श्री मनीष दीक्षित, उत्तर प्रदेश पश्चिम के क्षेत्रीय प्रबंधक श्री ललित शर्मा, खुदरा व्यवसाय प्रमुख श्री मोहित त्यागी तथा सेवा प्रबंधक श्री सुमित भारद्वाज विशेष रूप से मौजूद रहे। अधिकारियों ने किसानों के साथ सीधे संवाद में ट्रैक्टर की शक्ति और कृषि उपयोगिता की जानकारी दी। वहीं श्रीराम फाइनेंस के शाखा प्रमुख प्रवीण शर्मा एवं बंटी यादव ने आसान किस्त व लोन सुविधाओं पर मार्गदर्शन दिया। समारोह में पहुंचे पुराने ग्राहक संजय नायक का अनुभव सभी के आकर्षण का विषय बना। उन्होंने अपना चौथा ACE ट्रैक्टर खरीदा और बताया कि ट्रैक्टर की बेजोड़ शक्ति और शानदार माइलेज के कारण ही वे बार-बार इस ब्रांड पर भरोसा जता रहे हैं।

कार्यक्रम में शामिल 54 स्थानीय मैकेनिकों को कंपनी की तकनीकी टीम ने ट्रैक्टर के रखरखाव और नई तकनीकों की विस्तृत जानकारी दी। आयोजन समिति का मानना है कि मैकेनिक ग्रामीण क्षेत्रों में किसानों के सबसे भरोसेमंद सलाहकार होते हैं। इस सफल आयोजन से छर्रा, अतरौली और आसपास के ग्रामीण इलाकों में ACE ट्रैक्टरों की बाजार में पकड़ मजबूत होने की उम्मीद जताई जा रही है।

संदीप पाटीदार जियोलाइफ एग्रीटेक के नये डिप्टी जोनल सेल्स मैनेजर



इंदौर। जियोलाइफ एग्रीटेक इंडिया प्राइवेट लिमिटेड ने श्री संदीप पाटीदार को कंपनी का नया डिप्टी जोनल सेल्स मैनेजर नियुक्त किया है। श्री पाटीदार को कीटनाशक उद्योग का 14 वर्षों से अधिक सुदीर्घ अनुभव है। इसके पहले आप स्वाल कार्पोरेशन में भी सेवायें दे चुके हैं।

पीएम किसान सम्मान निधि की 24वीं किस्त का वितरण

धार। प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना की 24वीं किस्त के हस्तांतरण कार्यक्रम का सजीव प्रसारण कृषि विज्ञान केन्द्र, धार में किया गया।

धार जिले के 2,28,120 किसानों के खातों में 45 करोड़ 62 लाख 40 हजार रुपये पहुंचे। इनमें 16,530 वनाधिकार पट्टाधारी किसानों को भी 3 करोड़ 30 लाख 60 हजार रुपये की सहायता मिली। केन्द्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ. एस.एस. चौहान ने किसानों को मृदा स्वास्थ्य एवं उन्नत कृषि तकनीकों की जानकारी दी।

सोंधिया बीज भंडार की ओर से समस्त कृषक बंधुओं को दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएं



प्रो. अजय सोंधिया

समस्त प्रकार के कीटनाशक दवाईयां, बीज, जैविक उत्पाद एवं सूक्ष्म पोषक तत्व, स्प्रे पंप के अलावा समस्त प्रकार के घरेलू उपकरण जैसे गैस चूल्हा रिपेरिंग एवं टॉर्च सुधारे एवं बेचे जाते हैं।

में. सोंधिया बीज भंडार

अस्पताल चौराहा, देवलोद (बाणसागर)
जिला-शहडोल (म.प्र.) मो.9424335104

एनआईबीएसएम करेगा किसानों को जागरूक



रायपुर। रबी सीजन में मृदा स्वास्थ्य सुधारने, उर्वरकों के संतुलित उपयोग और प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण को बढ़ावा देने के लिए आईसीएआर-राष्ट्रीय जैविक स्ट्रेस प्रबंधन संस्थान और कृषि विज्ञान केंद्र बेमेतरा संयुक्त रूप से देशव्यापी खेत बचाओ अभियान संचालित करेंगे। यह अभियान 22 अक्टूबर से 30 नवंबर 2026 तक चलेगा। इसके तहत किसानों को टिकाऊ एवं जलवायु-अनुकूल कृषि पद्धतियों की जानकारी देने के साथ प्रशिक्षण और प्रदर्शन गतिविधियां आयोजित की जाएंगी।

एनआईबीएसएम के निदेशक डॉ. पी.के. राय ने मृदा की उर्वरता बनाए रखने, कृषि संसाधनों का दक्ष उपयोग करने और दीर्घकालीन कृषि स्थिरता सुनिश्चित करने के लिए वैज्ञानिक पद्धतियां अपनाने पर जोर दिया। संस्थान के संयुक्त निदेशक एवं अभियान के नोडल अधिकारी डॉ. पंकज शर्मा ने बताया कि एनआईबीएसएम के वैज्ञानिक, केवीके बेमेतरा के सहयोग से किसानों को तकनीकी मार्गदर्शन, प्रशिक्षण और वैज्ञानिक जानकारी उपलब्ध करायेंगे। इसके साथ ही जागरूकता कार्यक्रमों के माध्यम से किसानों की क्षमता विकसित करने के प्रयास किए जायेंगे। अभियान के दौरान फसलों की आवश्यकता के अनुसार उर्वरकों के संतुलित एवं विवेकपूर्ण उपयोग, सामान्य उर्वरक अनुशंसाओं (जीएफआर), एकीकृत पोषक तत्व प्रबंधन (आईएनएम) तथा जैविक एवं जैव उर्वरकों के उचित इस्तेमाल की जानकारी दी जायेगी। प्राकृतिक खेती को प्रोत्साहित करने के साथ फसल अवशेषों को जलाने के बजाय उनका उचित प्रबंधन करने और मृदा की नमी एवं प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण पर भी ध्यान दिया जाएगा।

दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएं

Classic® Where Quality Begins...

क्लासिक सालों साल बेमिसाल

एच.डी.पी.ई., यू.पी.वी.सी. पाईप्स एवं एच.डी.पी.ई. फव्वारा सिंचाई प्रणाली (स्प्रिंकलर सिस्टम)

- क्लासिक एच.डी.पी.ई., यू.पी.वी.सी. पाईप्स एवं एच.डी.पी.ई. फव्वारा सिंचाई प्रणाली उच्च गुणवत्ता से निर्मित।
- ऊंची-नीची जगहों पर भी आसानी से उपयोग लायक।

मध्यप्रदेश शासन द्वारा अनुदान योजनांतर्गत अनुमोदित



निर्माता- सिद्धार्थ पाईप्स एण्ड फिटिंग्स

प्लॉट नं. 233, फेस-2, बिरकोनी औद्योगिक क्षेत्र, बिरकोनी, जिला-महासमुंद (छ.ग.) 493445
+91 98261-26813, 98261-50865 siddharthpipes@rediffmail.com
क्षेत्रीय कार्या. : कटंगी बाईपास, शिवशक्ति मैरिज गार्डन के सामने, जबलपुर (म.प्र.) 9425508813

भोपाल, इंदौर एवं उज्जैन संभाग के लिए वितरक की आवश्यकता है।

फसल प्रदर्शन में रावे छात्राओं ने निभाई अहम भूमिका

रीवा। कृषि विज्ञान केंद्र, रीवा द्वारा किसानों तक दलहन एवं तिलहन फसलों की उन्नत किस्मों और आधुनिक कृषि तकनीकों का हस्तांतरण करने के उद्देश्य से क्लस्टर प्रदर्शन एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसके माध्यम से किसानों को चना एवं सरसों के गुणवत्तापूर्ण बीजों के उपयोग और बेहतर उत्पादन प्राप्त करने की वैज्ञानिक विधियों की जानकारी दी गई। कार्यक्रम का क्रियान्वयन कृषि महाविद्यालय, रीवा के अधिष्ठाता डॉ. एस.के. त्रिपाठी एवं कृषि विज्ञान केंद्र के प्रमुख डॉ. ए.के. पांडेय के मार्गदर्शन में किया गया। इस दौरान कृषि विज्ञान केंद्र की प्रदर्शन प्रभारी डॉ. स्मिता सिंह एवं पौध रोग विशेषज्ञ डॉ. के.एस. बघेल ने किसानों को तकनीकी मार्गदर्शन प्रदान किया। किसानों को कार्यक्रम से जोड़ने और उन्हें उन्नत कृषि तकनीकों के प्रति प्रेरित करने में कृषि विज्ञान केंद्र से संबद्ध रावे (ग्रामीण कृषि कार्य अनुभव) की छात्राओं ने सक्रिय भूमिका निभाई। इनमें रिद्धि सिंह, कुमकुम, मृणाल, प्रांजलि, जया, अदिति, शिखा, मान्यता, रेणुका, साक्षी, वंशिका, मुस्कान, प्रिया, पूर्णिमा, आंचल, तृप्ति, छवि, प्रीति, पूजा, शैली, प्रथा, सिमरन, सुहानी, कृतिका, मेधावी, जेनिस, नेहा, दिव्या एवं हर्षा शामिल रहीं। छात्राओं ने किसानों के बीच तकनीकी जानकारी पहुंचाने और प्रदर्शन गतिविधियों में सहभागिता कर महत्वपूर्ण योगदान दिया। इस अवसर पर कृषि विज्ञान केंद्र के वैज्ञानिक डॉ. ए.के. पटेल, डॉ. संजय सिंह, एम.के. मिश्रा तथा ग्राम रौरा के सरपंच राजेश वर्मा एवं ग्राम भटलो के सरपंच कौशल सिंह उपस्थित रहे।

किसानों की सेवा में अग्रणी रजत कृषि सेवा केन्द्र

(उमाशंकर तिवारी)

मिसरोद। भोपाल स्थित मिसरोद में रजत कृषि सेवा केन्द्र के संचालक यशराज सिंह तंवर ने बताया कि 25 वर्षों से लगातार किसानों की सेवा में यह संस्था समर्पित है। सरल स्वभाव के धनी यशराज सिंह तंवर ने बताया कि इस संस्थान के माध्यम से उच्च गुणवत्ता युक्त पेस्टीसाइड्स, जैविक खाद के अलावा कृषि से संबंधित जानकारियां उपलब्ध कराना पहली प्राथमिकता है। मिसरोद के अलावा, बागली एवं दूर दराज के लगभग 1500 से अधिक किसान इस संस्था से जुड़े हुए हैं। रजत कृषि सेवा केन्द्र द्वारा उच्च क्वालिटी का पेस्टीसाइड्स उपलब्ध कराना एवं किसानों को उचित सलाह देना सर्वोच्च प्राथमिकता है। श्री यशराज तंवर हमेशा किसानों को समझाईश देते हैं कि उच्च गुणवत्ता वाले जैविक खाद का उपयोग करें ताकि फसल उत्पादन बढ़ाकर मुनाफा कमाया जा सके। श्री तंवर कंपनियों के सेल्स टीम के माध्यम से दूरदराज तक किसानों के खेतों में लगी बीमारियों के बारे में उचित सलाह एवं मार्गदर्शन देने में पीछे नहीं रहते। इसी कारण से किसानों के बीच रजत कृषि सेवा केन्द्र, मिसरोद लोकप्रिय है। श्री तंवर ने किसानों को सलाह दी है कि खेती में वित्तीय प्रबंधन एवं समय का विशेष ख्याल रखना चाहिए। समय-समय पर फसलों का निरीक्षण करके समुचित प्रबंधन करना चाहिए।

जानिए अपने क्षेत्र के कृषि आदान विक्रेता को



डॉ. सोलंकी ने इफको राज्य विपणन प्रबंधक छग का पदभार संभाला



रायपुर। भारतीय किसान उर्वरक सहकारी लिमिटेड (इफको) के डॉ. डी.के. सोलंकी ने छत्तीसगढ़ के नये राज्य विपणन प्रबंधक के रूप में पदभार ग्रहण कर लिया है। इससे पहले वे मध्यप्रदेश में राज्य विपणन प्रबंधक के पद पर कार्यरत थे। अब वे छत्तीसगढ़ में इफको के विपणन एवं प्रशासनिक कार्यों की जिम्मेदारी संभालेंगे।

पदभार ग्रहण करने पर इफको के छत्तीसगढ़ राज्य कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने पुष्पगुच्छ भेंट कर उनका स्वागत किया। इस अवसर पर टीम ने डॉ. सोलंकी के नेतृत्व में राज्य में इफको की गतिविधियों को और अधिक प्रभावी बनाने तथा सहकारिता को सशक्त करने के लिए मिलकर कार्य करने का संकल्प लिया। डॉ. सोलंकी के अनुभव और मार्गदर्शन से छत्तीसगढ़ में किसानों के हितों को बढ़ावा देने, कृषि आदानों की उपलब्धता बेहतर बनाने तथा ग्रामीण विकास से जुड़ी गतिविधियों को गति मिलने की उम्मीद है। इस अवसर पर उप महाप्रबंधक राजेश गोले, उप प्रबंधक दिनेश गांधी सहित राज्य कार्यालय एवं क्षेत्रीय कार्यालयों के अधिकारी उपस्थित रहे।

कृषक दूत
कृषि एवं ग्रामीण विकास का प्रमुख साप्ताहिक
एफ.एम.-16,ब्लॉक-सी,मानसरोवर कॉम्पलेक्स,हबीबगंज रेल्वे स्टेशन के पास, होशंगाबाद रोड, भोपाल-16 (म.प्र.) फोन-0755- 4233824
मो. : 9425013875, 9827352535, 9300754675
E-mail:krishak_doot@yahoo.co.in Website:www.krishakdoot.org

कृषक दूत द्वारा प्रकाशित विभिन्न बहुपयोगी पुस्तकें



रबी फसलों की कृषि कार्यमाला मूल्य 40/- | फसलों में एकीकृत रोग प्रबंधन मूल्य 250/- | चने की उन्नत खेती मूल्य 30/- | सब्जियों की उन्नत तकनीकी मूल्य 150/- | फसलों में कीट रोग प्रबंधन मूल्य 70/- | सब्जियों में पोषक तत्व प्रबंधन मूल्य 30/- | फूलों की खेती मूल्य 30/-
धान की उन्नत खेती मूल्य 100/- | सोयाबीन की खेती मूल्य 20/- | खरीफ फसलों की खेती मूल्य 50/- | कपास की खेती मूल्य 50/- | गन्ने की खेती मूल्य 25/- | पशुपालन मूल्य 100/- | बकरी पालन मूल्य 100/-
जैविक खेती मूल्य 50/- | वर्मी कम्पोस्ट मार्गदर्शिका मूल्य 30/- | खरपतवार प्रबंधन मूल्य 50/- | भण्डारण के वैज्ञानिक तरीके मूल्य 30/- | कृषि यंत्रों का चुनाव एवं रखरखाव मूल्य 50/- | दलहनी फसलों की खेती मूल्य 30/- | तिलहनी फसलों की उन्नत खेती मूल्य 50/-
गुलाब की खेती मूल्य 30/- | फलों की उन्नत खेती मूल्य 50/- | ट्रैक्टर का रखरखाव मूल्य 50/- | मिर्च की उन्नत खेती मूल्य 30/- | फलों का औष. उपयोग मूल्य 100/- | मधुमक्खी पालन मूल्य 150/-

कृषक दूत मुख्य कार्यालय : एफ.एम.-16,ब्लॉक-सी, मानसरोवर कॉम्पलेक्स, रानी कमलापति रेल्वे स्टेशन के पास, होशंगाबाद रोड, भोपाल (म.प्र.) फोन (0755) 4233824
E-mail:krishak_doot@yahoo.co.in Website:www.krishakdoot.org

सदस्यता फार्म

कृषक दूत
कृषि एवं ग्रामीण विकास का प्रमुख साप्ताहिक
एफ.एम.-16,ब्लॉक-सी,मानसरोवर कॉम्पलेक्स,हबीबगंज रेल्वे स्टेशन के पास, होशंगाबाद रोड, भोपाल-16 (म.प्र.) फोन-0755- 4233824
मो. : 9425013875, 9827352535, 9300754675
E-mail:krishak_doot@yahoo.co.in Website:www.krishakdoot.org

सदस्य का नाम.....
संस्था का नाम.....
पूरा पता.....
ग्राम.....पोस्ट.....तहसील .....
जिला.....राज्य.....पिन कोड
दूरभाष/कार्या. ..... घर ..... मोबा. : .....

सदस्यता राशि का ब्यौरा

■ वार्षिक	: 700/-	■ द्विवार्षिक	: 1300/-
■ तृवार्षिक	: 1900/-	■ पंचवर्षीय	: 3100/-
■ दसवर्षीय	: 6100/-	■ आजीवन	: 11000/-

कृपया हमें/मुझे कृषि एवं ग्रामीण क्षेत्र का साप्ताहिक समाचार पत्र " कृषक दूत" की सदस्यता प्रदान कर नियमित रूप से उक्त पते पर पत्रिका भेजने की व्यवस्था करें। सदस्यता राशि नकद/ मनीआर्डर/ चेक/ डिमांड ड्राफ्ट द्वारा राशि रुपए (अंकों में).....(शब्दों में).....
बैंक का नाम..... ड्राफ्ट चेक क्रमांक.....
दिनांक..... संलग्न है। पावती भेजने की व्यवस्था करें।

स्थान..... प्रतिनिधि का नाम हस्ताक्षर सदस्य
दिनांक..... एवं हस्ताक्षर एवं संस्था सील

उम्मीद से
ज़्यादा का वादा

ACE TRACTORS

50 HP Chetak DI 65 (4WD)

4 सिलिण्डर का 4088 CC दमदार इंजन



विशेषताएं

- पॉवर स्टीयरिंग
- 4088 cc का दमदार इंजन
- ड्रयल क्लच
- हैवी डयूटी फ्रंट एक्सल (करारो)
- लिफ्ट 2000 kg
- आगे के टायर 9.5x24
- पीछे के टायर 16.9x28
- MRF Tyre



दमदार ट्रैक्टर
शानदार परफॉर्मेंस

DI 350 NG | 40 HP

विशेषताएं

- पॉवर स्टीयरिंग
- लिफ्ट 1200 kg
- 2858 cc का दमदार इंजन
- ऑयल ब्रैक्स (तेल में डूबे)
- सिंगल / ड्रयल क्लच
- आगे के टायर 6x16
- पीछे के टायर 13.6x28
- इंजन रेटिड 1800 rpm

हर कदम हर डगर
ACE TRACTORS
हर किसान का हमसफर

100% Swadeshi

ACE ट्रैक्टर 15–90 HP में उपलब्ध

कस्टमर हेल्प लाइन 1800 1800 004

अग्रणी बैंकों एवं प्राईवेट फाइनेन्स कम्पनियों द्वारा आसान किश्तों में फाइनेंस उपलब्ध

रिक्त स्थानों में डीलरशिप के लिए सम्पर्क करें - संजय कुमार : 9540943883

ACTION CONSTRUCTION EQUIPMENT LTD.

Marketing Office :- Jajru Road, 25th Mile Stone, Mathura Road, Ballabgarh, Faridabad-121004, Haryana, India
Phone : 0129-2306111, Website : www.ace-cranes.com

आर.एन.आई.नं. एमपी एचआईएन/2000/06836 डाक पंजीयन क्र. एम.पी./ भोपाल/625/2024-26 कृषक दूत- एफ.एम.-16, ब्लॉक-सी, मानसरोवर काम्प्लेक्स, होशंगाबाद रोड, भोपाल-462016 (म.प्र.) Email:- krishak_doot@yahoo.co.in
डाक प्रेषण का दिन- मंगलवार

कृषक दूत

अंतिम पृष्ठ क्रमांक-24
भोपाल मंगलवार 03 से 09 नवम्बर 2026

Hero

HF Deluxe

बाइक दमदार दाम शानदार

एक्स-शोरूम कीमत
₹59 999/-*
(सेल्फ़-स्टार्ट)

*नियम व शर्तें लागू.

कम डाउन पेमेंट | ₹5999/-*

Hero GoodLife सोने का सिक्का जीतने का मौका*

pine labs कैशबैक ₹5000/- तक*

TOLL FREE 1800 266 0018

INDIA'S FIRST 5 YEAR WARRANTY* *Conditions apply

Hero MotoCorp Ltd, Regd. Office: The Grand Plaza, Plot No. 2, Nelson Mandela Road, Vasant Kunj Phase - II. New Delhi-110070, India. ICIN: L35911DL1984PLC0173541. For further information, contact your nearest Hero MotoCorp authorised outlet or CALL TOLL-FREE 1800 266 0018 or visit us on www.heromotocorp.com. Accessories and features shown may not be part of standard fitment. Always wear a helmet while riding a two-wheeler. ^Finance offers are at the sole discretion of the financier, subject to its respective T&Cs. *Offer valid only on purchase of new Hero Two Wheeler & Hero GoodLife Enrollment on the corresponding purchase till 31st July 2026. #The Cashback of 5% upto ₹5000 is applicable on the transaction between ₹30 000 to ₹1 00 000. The new revised ex-showroom price is valid for a limited period only. Hero MotoCorp reserves the right to modify or withdraw any or all offers without prior notice. *Ex-showroom price of HF Deluxe Canvas Self start variant applicable in Madhya Pradesh. *Terms & Conditions apply.

अधिकृत डीलरः भोपाल: वरेण्यम हीरो (प्रभात पेट्रोल पंप, रायसेन रोड 9289922466, जे.के. रोड 8959905381), साँई हीरो (डी.आई.जी. बंगला, बैरसिया रोड) 9289922685, यूनाइटिड हीरो (कोहेफिज़ा) 9289923150, इंदौरः सुखमणी हीरो (अन्नपूर्णा रोड) 9289922719, वी.एन. हीरो (एयरपोर्ट रोड) 9289923061, सेठी ऑटोमोबाइल्स (भवरकुआँ) 9289923211, रुक्मारानी ऑटोमोटिव (एलआईजी स्क्वायर के पास) 8871444414, मेहता ऑटोमोबाइल्स (देवास नाका), 9821741577, ग्वालियरः तनुष्का हीरो (सिटी सेन्टर 9289922371, मुरार 4099928, कम्पू 4072000), तरन अंगद हीरो (फूलबाग 9289922483, सखियाँ विलास 2438534), जबलपुरः सुपर हीरो (साउथ सिविल लाईन्स) 9289922350, सुदर्शन हीरो (नेपियर टॉउन 9289922353, मदन महल 9111100352, दमोह नाका 9111100344), उज्जैनः क्षिप्रा हीरो (फ्रीगंज, देवास रोड) 9289922354, लोहिया हीरो (चिमनगंज मंडी के सामने) 9289922718, बैतूलः खण्डेलवाल हीरो, 9289922624, सीहोरः मंत्री हीरो (कन्हैयालाल मंत्री पेट्रोल पंप, इंदौर नाका) 9522257567, ब्यावराः आनंद हीरो 9289922871, गुनाः गगन हीरो 9289922358, अशोक नगरः आरव हीरो 9821743269, होशंगाबादः पुण्यशिला हीरो 9289922360, हरदाः राहुल हीरो 9289922491, विदिशाः पाल हीरो 9289922379, दमोहः इण्डिया ऑटो हीरो 9289922573, सागरः सेन्ट्रल हीरो (भगवानगंज, मक्रोनिया) 9289922376, टीकमगढ़ः आनंद हीरो 9289923112, छतरपुरः आनंद हीरो (झाँसी रोड 9289922374, पन्ना रोड 7389238472), बड़वानीः शर्मा हीरो 9289922742, बुरहानपुरः श्रीजी हीरो 9289922372, देवासः खुराना हीरो (ए.बी. रोड 9289922488, गंगानगर 9993596392), धारः साक्षी हीरो 9289922618, हाट पिपलियाः श्रीराम हीरो 9289923154, झाबुआः नाकोड़ा हीरो 9289922679, कुक्षीः अन्नपूर्णा हीरो 9289922749, खण्डवाः ठक्कर हीरो 9289923018, खरगोनः निमाड़ हीरो 9289922378, महूः लक्ष हीरो 9289923176, पीथमपुरः रघुवंशी हीरो 9289923047, सनावदः राजेश हीरो 9289922774, बालाघाटः जायसवाल हीरो 9289922572, छिन्दवाड़ाः सत्कार हीरो 9289922805, मण्डलाः शुभा हीरो 9289922600, नरसिंहपुरः रचना हीरो 9289922377, रीवाः बद्रिका हीरो (टी.पी. नगर 9752263333, इलाहाबाद रोड 9171705391), सतनाः स्टार हीरो 9289922356, बद्रिका हीरो 9289923108, शहडोलः विभोर हीरो 9289923109, गुप्ता हीरो 9289922370, कटनीः हर्ष हीरो 9289923166, वैढ़नः कुन्दन हीरो 9289922743, बजरंग मोटर्स 7354559000, सीधीः राजेन्द्र मोटर्स 9289923113, सिवनीः सुदर्शन हीरो 9821745435, चौरईः श्रीजी ऑटोमोबाईल्स, 9821749342, भिन्डः शिवम हीरो 9289922787, दतियाः शिव हीरो 9289923172, मुरैनाः गगन हीरो 9289922678, श्योपुरः आशीष हीरो 9289922832, शिवपुरीः रघुवंशी हीरो 9289922571, बड़नगरः स्वास्तिक हीरो 9289922773, शाजापुरः बाबा हीरो 9289922833, रतलामः एक्सीलेन्ट हीरो (महू रोड 9289922375, सैलाना रोड 07412-408600) नीमचः उत्तम हीरो 9289922367, मन्दसौरः रामदर्शन हीरो 9289922369, जावराः रिलायबल हीरो 9289923045.

रायपुरः छत्तीसगढ़ हीरो 9289922351, आरसन हीरो 9289922864, राजनांदगांवः जय हीरो 9289922357, धमतरीः सत्योम हीरो 9289922525, कांकेरः राहुल हीरो 9289922834, महासमुंदः वत्स हीरो 9289922623, बलोदाबाजारः अग्रवाल हीरो 9289922959, आरंगः श्री राम हीरो 9289922968, बेमेतराः श्री सांई हीरो 9289922835, कवर्धाः सरस्वती हीरो 9289922958, जगदलपुरः विजयपाल हीरो 9289923064, दंतेवाड़ाः जय विजय हीरो 9289922990, दल्लीराजहराः लक्ष्मी हीरो 9289922983, भाटापाराः कुशल हीरो 9289923052, भिलाईः इंडियन हीरो 9289922355, चौहान मोटर्स 9289233817, दुर्गः उत्सव हीरो 9289923114, उत्सव हीरो 7000595300, बिलासपुरः सत्या हीरो 9289922464, गैलेक्सी हीरो 9289922706, अंबिकापुरः आनंद हीरो 9289922359, सरगुजा हीरो 9289923110, कोरबाः शांति हीरो 9289922813, छत्तीसगढ़ हीरो 9289923057, रायगढ़ः गोयल हीरो 9289922373, आदित्य हीरो 9289923091, जांजगीरः आनंद हीरो 9289922772, बैकुंठपुरः आर.के. हीरो 9289922812, जशपुरः आकाश हीरो 9289922909.